Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

卐 卐

वैदिक विवाहगीताञ्जलिः

५.3v2

श्रद्धयावाप्यते यशः

२१ अप्रैल १९७५

卐 卐

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक विवाहगीताञ्जलिः

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र
तिथी.........
पु०सं०...1952
भारती पुस्तकालय

डॉ० निरूपण विद्यालंकार
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
मेरठ कालिज, मेरठ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111/4

महर्षि-पाणिनि-महा-अनुसंधान
तिथि.......
पु०सं०. 1952
भारती पुस्तकालय

श्रद्धा—यश: के विवाह में सम्मिलित सदस्यों
की सेवा में डॉ० निरूपण विद्यालंकार की
ओर से सप्रेम भेंट।

गुढ़ा—मैनपुरी
२१४७५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1942

वैदिक गृहस्थाश्रम का एक चित्र

स्मृतिकारों ने ठीक कहा है कि जैसे वायु का आश्रय पाकर सब जीव-जन्तु प्राण धारण करते हैं उसी प्रकार गृहस्थ के आश्रय से शेष सब आश्रम जीवन पाते हैं। सचमुच गृहस्थाश्रम विशेष महत्त्व का आश्रम हैं। वेदों में इस आश्रम के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा गया है। यहाँ दिग्दर्शन के रूप में ही कुछ वर्णन प्रस्तुत किया जाता है।

घरों की समृद्धि

अथर्ववेद के तृतीय काण्ड के शालासूक्त में एक मन्त्र इस प्रकार है—

इहैव ध्रुवा प्रति तिष्ठ शालेऽश्वावती गोमती सूनृतावती।
ऊर्जस्वती घृतवती पयस्वत्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय॥

अथर्व ३. १२. २.

अर्थात् हे मेरी शाला! तू जहाँ बनी हुई है वहाँ चिरकाल तक स्थिर होकर खड़ी रह। तेरे अन्दर घोड़े हों, गौएँ हों। तुझमें रहने वाले लोग सदा परस्पर सत्य और मधुर वाणी बोला करें। तू अन्न से भरपूर हो, घृत से भरपूर हो, दूध से भरपूर हो और हमारी महान् सुख-समृद्धि के लिये सदा ऊँची खड़ी रह।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मन्त्र को पढ़ कर हमारे सामने एक आदर्श समृद्ध घर का चित्र खिच जाता है। एक गृहपति कह रहा है कि हे मेरी शाला ! तू दृढ़ता के साथ वरसों तक वैसी की वैसी खड़ी रह, तू इतनी दृढ़ हो कि आँधी-पानी-ओले-विजली तुझे क्षति न पहुँचा सकें। पर इतना ही पर्याप्त नहीं है कि घर भव्य और सुदृढ़ हो, उसमें किसी प्रकार ऐश्वर्य की भी न्यूनता नहीं रहनी चाहिये। हमारे उपयोग के लिये आवश्यकतानुसार घोड़े घर में हों। घोड़ा यहाँ सवारी का एक प्रतिनिधि है, इससे रथ या आधुनिक युग की सवारियाँ भी गृहीत समझनी चाहियें। इनके साथ-साथ घर में एक या अधिक गौएँ भी होनी चाहियें, जिससे हमें यथेच्छ दूध भी मिल सके। घरों में ऐसा दृश्य देखने में न आये कि वाल-बच्चे दूध के लिये तरसते हों। परिवार के वाल-युवा-वृद्ध प्रत्येक सदस्य को भरपूर दूध-दही-घी-मठा मिलता हो, ऐसी आनन्दमय अवस्था घरों की होनी चाहिये।

इस दूध-घी के ऐश्वर्य के साथ-साथ अन्न का ऐश्वर्य भी घर में यथेच्छ हो। यह 'ऊर्जस्वती' शब्द से सूचित किया गया है।

निम्न मन्त्र में इस भाव को और भी सुन्दर रूप में चित्रित किया है—

एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह।

एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः॥ अथर्व ३, १२, ७

अर्थात् "हमारी इस शाला के अन्दर कुमार हों, तरुण हों, नन्हें-नन्हें बच्चे किलकारी भरते हों। लबालब भरे हुए दूध के घड़े और दही के मटके रखे रहते हों।" वैदिक गृहस्थाश्रम का यह चित्र कितना रम्य है। जब घर की समृद्धि ऐसी होगी तब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि कोई अतिथि घर में आ जायेगा तो वह सूखी रोटी खाकर नहीं लौटेगा, किन्तु उसका कैसा सत्कार होगा, यह वेद के शब्दों में ही इस प्रकार है—

पूर्णं नारि प्र भर कुम्भमेतं
घृतस्य धाराममृतेन संभृताम् ।
इमां पात्रीनमृतेना समङ्धि········ अथर्व ३. १२ ८

हे नारि ! देख तेरे घर में अतिथि आये हैं। दूध से भरा यह कलश ले जाकर उनके आगे रख दे, यथेच्छ पान करा। घृत की धाराओं से उनका स्वागत कर।

इसी सूक्त का तीसरा मन्त्र है—

धरुण्यसि शाले बृहच्छन्दाः पूतिधान्या।
आ त्वा वत्सो गमेदा कुमार आ धेनवः
सायमास्यन्दमानाः ॥ अथर्व ३. १२. ३

हे मेरी शाला ! तू दृढ़ स्तम्भों वाली है, विशाल छत वाली हैं, पवित्र धान्य से परिपूर्ण है। मेरी आकांक्षा है कि तुझ में नन्हें-नन्हें बच्चे ठुमक-ठुमक कर चलें, तुझमें कुमार पदार्पण करें, सायंकाल को चरागाहों से लौटकर उछलती-कूदती गौएँ प्रवेश किया करें।

गृहसमृद्धि के सूचक निम्न मन्त्र भी देखने योग्य हैं—

सं सं स्रवन्तु पशवः समश्वाः समु पूरुषाः
सं धान्यस्य या स्फातिः संस्राव्येण हविषा जुहोमि ॥ अथर्व २. २६. ४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे घर में बड़ी संख्या में गौ आदि पशु आयें, रथ-घोड़े आयें, पुरुष आयें। कोठों में धान यथेष्ट भरा हो। नित्य भर-भर कर आती हुई हवि से मैं यज्ञ करता रहूँ।

संं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ ॥ अथर्व २. २६. ४

मेरे घर में इतना दूध-घी है कि मैं दूध पीता क्या हूँ मानो गो दुग्ध से शरीर को सींचता हूँ। यथेष्ट घृत से शरीर में बल और रस को संचरित करता हूँ। अकेला मैं ही नहीं, परिवार के सब लोग, परिवार की सब वीर सन्तानें घी-दूध से तृप्त रहती हैं। सदा ही मुझ गोसेवक के पास गौएं विद्यमान रहती हैं।

इन सब वचनों से वेद की दृष्टि में घर की समृद्धि कैसी अपार होनी चाहिये, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

गृहस्वामी की गृहवासियों के प्रति चिन्ता

वैदिक गृहस्थाश्रम का एक और दृश्य देखने योग्य है। गृहस्वामी धनोपार्जन आदि किसी कार्य से बाहर प्रवास को गया हुआ है। प्रवास में रहते हुये उसे घर की चिन्ता नहीं भूली है। लौटता हुआ वह कहता है—

ऊर्जं बिभ्रद् वसुवनिः सुमेधा, अघोरेण चक्षुषा मित्रियेण।
गृहानैमि सुमना वन्दमानो, रमध्वं मा बिभीत मत् ॥

अथर्व ७. ६०. १

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे गृहवासियों ! मैं तुम्हारे लिये अन्न लाया हूँ, धन लाया हूँ, प्रत्येक के लिये सुन्दर सौगात लाया हूँ। आँखों में प्रेम के अश्रु भरे हुए, शुभ विचार और प्रसन्न मन के साथ सबका कुशल-क्षेम पूछता हुआ, नमस्कार करता हुआ तुम गृहवासियों के पास आता हूँ। आओ, मेरे पास आकर हँसो, खेलो। मुझसे भय मत करो।

इमे गृहा मयोभुव ऊर्जस्वन्तः पयस्वन्तः।
पूर्णा वामेन तिष्ठन्तस्ते नो जानन्त्वायतः ॥२॥

आहा ! ये मेरे गृहीजन हैं, सब सुखी हैं, धन-धान्य से समृद्ध हैं, दूध की इन्हें कमी नहीं है, सब आवश्यक वस्तुओं से परिपूर्ण हैं। मुझ प्रवास से लौटे हुए को ये सब पहचानें और प्रेम से आकर गले मिलें।

येषामध्येति प्रवसन् येषु सौमनसो बहुः।
गृहानुप ह्वयामहे ते नो जानन्त्वायतः ॥३॥

प्रवास में रहते हुए मनुष्य को जिनकी सदा याद आती रहती है, जिनके बीच में रहने से एक अपूर्व आनन्द की अनुभूति होती है, उन अपने कुटुम्बी-जनों को मैं बुलाता हूँ। प्रवास लौटे हुए मुझको वे सब पहचानें और प्रेम से आकर गले मिलें।

उपहूता भूरिधनाः सखायःस्वादुसमुदः।
अक्षुध्या अतृष्या स्त गृहा मास्मत् बिभीतन ॥४॥

आओ, प्रियजनो ! मैं तुम्हें बुला रहा हूँ। मेरी छाया में रहते हुए तुम प्रचुर धन-धान्य से समृद्ध होवो, परस्पर मैत्रीभाव से रहो, मधुर आनन्द के भागी बनो। घर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अपार समृद्धि भरी है ।, कभी वे दिन नहीं आयेंगे कि तुम्हें भूखा-प्यासा रहकर दिन काटने पड़ें । हे गृहीजनो ! मुझसे भय मत करो ।

उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः ।
अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः ॥५॥

तुम्हारे आराम के लिये मैं घर में गौएँ लाता हूँ, भेड़-बकरियाँ या उनसे प्राप्त होने वाली वस्तुएँ अर्थात् पीने के लिये दूध और पहनने के लिये ऊनी कपड़े लाता हूँ, तथा विविध प्रकार के रसीले-रसीले अन्न लाता हूँ ।

सूनृतावन्तः सुभगा इरावन्तो हसामुदाः ।
अतृष्या अक्षुध्या स्त गृहा मास्मद् विभीतन ॥६॥

प्यारो ! हँसीखुशी से मिल कर रहो, आपस में मीठी वाणी बोलो । धनधान्य की कमी नहीं है, यथेच्छ खाओ-पियो । मुझसे भय मत करो, मैं तो तुम सबसे प्रेम करता हूँ ।

गृहपति बार-बार कह रहा है कि मुझसे भय मत करो । वस्तुतः ही गृहपति को साक्षात् प्रेम की मूर्ति होना चाहिये । परिवार में सबसे बड़ा होता हुआ भी वह अपने बड़प्पन के अभिमान में न रहे । घर के बाल-बच्चे, छोटे-बड़े सबके साथ वह ऐसा घुला-मिला हो कि सब उसके साथ प्रेम-सूत्र में बँधे रहें ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहस्थ-स्वर्ग

वेद की दृष्टि में गृहस्थाश्रम एक स्वर्ग है। जहाँ घी और शहद के तालाब भरे हैं, दूध-दही की नदियाँ वह रही हैं, पुष्कर पत्रों से अलंकृत सरसियाँ विद्यमान हैं, गृहवाटिका में हरी हरी दूब घास बिछी है, एक ओर फव्वारा छूट रहा है, पास ही कमल खिला सरोवर शोभायमान है। निम्न वर्णन देखिये—

घृतह्रदा मधुकूलाः सुरोदकाः,
क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना।
एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः,
स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमानाः।
उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ता ॥ अथर्व. ४.३४.६

आयने ते परायणे दूर्वा रोहतु पुष्पिणी।
उत्सो वा तत्र जायतां ह्रदो वा पुण्डरीकवान् ॥ अथर्व ६.१०६.१

इसी स्वर्ग की आकांक्षा करते हुए वेद में कहा गया है—

यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति, विहाय रोगं तन्वः स्वायाः।
अश्लोणा अङ्गैरह्रुताः स्वर्गे, तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान् ॥
अथर्व. ६. १२०. ३

अर्थात् जिस गृहस्थाश्रम रूपी स्वर्ग में गृहीजन परस्पर सौहार्द रखते हुए, सदा शुभ कार्य करते हुए, शरीर के रोगों से दूर रहते हुए सुख से रहा करते हैं उस गृहस्थ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्ग में हम भी सब अंगों से स्वस्थ और सदाचारी रह कर माता-पिता तथा पुत्रों का दर्शन करते हुए सदा आनन्दित होते रहें।

इसी गृहस्थ-स्वर्ग को लक्ष्य करके वेद में वर-वधू को सम्बोधित करके ये वचन कहे गये हैं—

स्योनाद्योनेरधि बुध्यमानौ, हसामुदौ महसा मोदमानौ।
सुगू सुपुत्रौ सुगृहौ तराथो, जीवावुषसो विभातीः॥

अथर्व १४-२-४३

अर्थात् आप दोनों इस गृहस्थाश्रम में जागृत रहें, हंसी खुशी व आमोद-प्रमोद को अनुभव करते रहें, दुधार गौओं के स्वामी और श्रेष्ठ पुत्ररत्नों के माता-पिता बनें और इस प्रकार सुन्दर शोभायमान घर में रहते हुए इन देदीप्यमान उषाओं को व्यतीत करते रहें।

इसी गृहस्थ-स्वर्ग के लिये कहा गया है—

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ॥ अथर्व १४-१-२२

"आप दोनों वर-वधू गृहस्थाश्रम के इस स्वर्ग में रहें और पुत्र-पौत्रों के साथ हंसते-खेलते-आनन्द मानते हुए, सुन्दर घर में रहते हुए इस आश्रम की सारी आयु व्यतीत करें।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार में प्रेमभाव

वेद के इस स्वर्ग में किस प्रकार परिवार के सदस्य प्रेमपूर्वक रहते हैं, यह दृश्य भी दर्शनीय है—

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् ॥
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥ अथर्व ३. ३०. २, ३

पुत्र पिता का आज्ञाकारी है, वह माता के प्रति भी आदर और प्रेम रखने वाला है। पत्नी पति से मिठास भरी और शान्तवाणी में वार्तालाप करती है। भाई भाई से द्वेष नहीं करता, बहिन बहिन से द्वेष नहीं करती। परिवार के सभी लोग मिलकर प्रेम से रहते हैं और अपने अपने कर्तव्य को करते हुए आपस में मीठी वाणी ही बोलते हैं।

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः, समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि ।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ॥
अथर्व ३. ३०. ६

सब साथ खाते हैं, साथ पीते हैं, साथ बैठ कर अग्निहोत्र करते हैं और परिवार में जो सबसे बड़ा है उसके अधीन इस प्रकार अनुकूल होकर रहते हैं जैसे रथचक्र की नाभि में सब अरे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी पति से कहती है—

अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम् ।
अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति ।। अथर्व ७. ३६. १

हम दोनों परस्पर ऐसे प्रेम से रहें कि हम दोनों की आँखों से माधुर्य टपकता हो, हम दोनों का मुख एक दूसरे को देखकर खिल उठता हो। हे प्यारे पति ! तू मुझे अपने हृदय के अन्दर बैठा ले, हम दोनों का मन सदा साथ रहे।

पति उत्तर देता है—

मम त्वा दोषणिश्रिषं कृणोमि हृदयश्रिषम् ।
यथा मम क्रतावसो मम चित्तमुपायसि ।। अथर्व ६. ६. २

हे प्यारी पत्नी ! मैं तुम्हें अपनी भुजा का सहारा देता हूँ, अपने हृदय में स्थान देता हूँ। तू मेरे कर्मों में सहयोग दे, तू मेरे चित्त में रम जा।

यह वैदिक प्रीतिभाव का आदर्श है। भाई-बहिन में, माता-पिता और पुत्र में, पति-पत्नी में परस्पर जो स्नेह-सौहार्द होना चाहिये उसका यह नमूना है।

गृह-राज्य की सम्राज्ञी

इस वैदिक गृहस्थाश्रम में नारी का भी एक महत्त्वपूर्ण और ऊंचा स्थान है। मध्यकाल की वह अवस्था जिसमें नारी को बहुत नीचे गिरा दिया गया है, वैदिक सभ्यता के सर्वथा विपरीत है। वेद की सभ्यता में तो नारी गृहराज्य की सम्राज्ञी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। नारी ही माता बनती है और माता ही सर्वप्रथम सन्तान में उन्नति के बीज वपन करने वाली है, इसलिये नारी का पद बहुत ऊँचा होना ही चाहिये। इसीलिये वेद का अनुसरण करते हुए मनु ने भी कहा है—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः," ३.५२" अर्थात् जिस देश में नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवता वास करते हैं।

अथर्ववेद में नारी की पति प्राप्ति का उल्लेख करते हुए कहा हैं—

इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट, सोमो हि राजा सुभगां कृणोति।
सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति, गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु॥

अथर्व २. ३६. ३।

यह नारी पति को प्राप्त करे, सोम राजा इसे सौभाग्यशालिनी बनाये। पति गृह में जाकर पुत्रों को पैदा करती हुई यह रानी बनकर रहे और सदा सौभाग्यवती बनी रहे।

विवाह प्रसंग में वधू को आशीर्वाद देते हुए कहा गया है—

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा।
एवा त्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य॥ अथर्व० १४. १. ४३

जैसे महान् समुद्र नदियों को अपना साम्राज्य दे देता है वैसे ही तुझे भी पतिगृह में जाकर सम्राज्ञी का पद प्राप्त हो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु सम्राज्ञ्युत देवृषु ।
ननान्दुः सम्राज्ञ्येधि सम्राज्ञ्युत श्वश्र्वाः ।।४४।।

तू श्वसुरों की दृष्टि में सम्राज्ञी बन, देवरों की दृष्टि में सम्राज्ञी बन, ननद की दृष्टि में सम्राज्ञी बन, सास की दृष्टि में सम्राज्ञी बन।

नारी को कर्त्तव्य-कर्मों का उपदेश

वेद के अनुसार इस गृह सम्राज्ञी को गृहस्थाश्रम में आकर किन किन कर्तव्यों का पालन करना चाहिये यह भी द्रष्टव्य हैं—

शिवा भव पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा ।
शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय शिवा न इहैधि ।।

अथर्व० ३.२८.३

हे नारि ! तू परिवार के पुरुषों को सुख देने वाली हो, घर के गाय-घोड़ों को सुख देने वाली हो, सारे ही कुटुम्ब के लिये मंगलकारिणी हो। इस गृहस्थाश्रम में रहती हुई तू हम सबके लिए मंगलमूर्ति बनी रह।

इह पुष्टिरिह रस इह सहस्रसातमा भव ।
पशून् यमिनि पोषय ।।४।।

अपना गृहप्रबन्ध ऐसा उत्तम रख कि सब गृहवासियों को पुष्टि प्राप्त हो, रस प्राप्त हो। अतिथियों को सहस्र धाराओं में दान किया कर। हे यम-नियमों का पालन करनेवाली ! घर में पशुओं का भी पालन-पोषण किया कर।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति, विहाय रोगं तन्वः स्वायाः ।
तं लोकं यमिन्यभिसंबभूव, सा नो मा हिंसीत् पुरुषान् पशूंश्च ।।४।।

जिस गृहस्थाश्रम में गृहीजन परस्दर सौहार्द भाव से रहते हुए, शुभ कर्मों को करते हुए, शरीर के रोगों से दूर रहते हुए सुख से रहा करते हैं, उस गृहस्थलोक में हे नारि ! आज तू प्रविष्ट हुई है । स्मरण रख, तेरे द्वारा परिवार के किसी भी पुरुष को और किसी भी पशु को क्लेश न पहुँचे ।

आशासाना सौमनसं, प्रजां सौभाग्यं रयिम् ।
पत्युरनुव्रता भूत्वा सं नह्यस्वामृताय कम् ।।

अथर्व० १४. १. ४२

तू मानसिक प्रसन्नता की, सौभाग्य की, सुख समृद्धि की आकांक्षा रखती हुई, पतिव्रता रहती हुई घर में अमृतमय अवस्था लाने के लिये कटिबद्ध रह ।

अदेवृघ्न्यपतिघ्नीहैधि, शिवा पशुभ्यः सुयमा सुवर्चाः ।
प्रजावती वीरसूर्देवृकामा, स्योनेममग्निं गार्हपत्यं सपर्य ।।

अथर्व० १४. २. १८

अपने आचरण से तू कभी देवरों को क्लेश न पहुँचा, पति को क्लेश न पहुँचा, पशुओं को सुख दे, सदा नियम में चल, तेजस्विनी बन, वीरप्रसवा हो और सबके लिये सुखदायिनी होती हुई गार्हपत्य अग्नि की आराधना करती रह ।

आ रोह चर्मोप सीदाग्निम्, एष देवो हन्ति रक्षांसि सर्वा ।
इह प्रजां जनय पत्ये अस्मै, सुज्यैष्ठचो भवत् पुत्रस्त एषः ।।२४।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगचर्म के शुभ आसन पर बैठकर प्रतिदिन अग्नि में होम किया कर, यह अग्निदेव सब राक्षसों=रोगों को नष्ट कर देता है। गृहस्थाश्रम में इस पति के लिये श्रेष्ठ पुत्र को जन्म दे और उसे ऐसी शिक्षा दे कि तेरा पुत्र एक दिन संसार में बड़ा बन कर दिखाये।

वि तिष्ठन्तां मातुरस्या उपस्थान्नानारूपाः पशवो जायमानाः।
सुमङ्गल्युप सीदेममग्निं संपत्नी प्रति भूषेह देवान् ॥२५॥

इस मातृभूमि में पैदा होने वाले नानाविध पशु तेरे घर रहें। तू मंगलमयी बन, अग्नि की उपासना करने वाली हो, सच्चे अर्थों में पत्नी बन और घर में आये देवजनों का सत्कार किया कर।

सुमङ्गली प्रतरणी गृहाणां,
सुशेवा पत्ये श्वशुराय शं भूः।
स्योना श्वश्र्वै प्र गृहान्, विशेमान् ॥२६॥

तू सुमंगली हो, गृहवासियों को कष्टों से तराने-वाली हो, सास-श्वशुर को सुख देनेवाली हो। इन गुणों को लेकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर।

स्योना भव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः।
स्योनास्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव ॥२७॥

श्वसुरों के लिये, पति के लिये, सारे ही घर के लिये तू सुखदायिनी हो और सबको सुख देती हुई तू इन सबकी पुष्टि का ध्यान रख।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र बुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना, दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ।
गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो, दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु ॥७५॥

प्रबुद्ध रह, ज्ञानवती और जागरूपक हो, दीर्घायु प्राप्त कर, सौ वर्ष जी । पतिगृह में जाकर गृहपत्नी वन । सूर्य तेरी आयु को लम्बा करे ।

ब्रह्मापरं युज्यतां ब्रह्म पूर्वं, ब्रह्मान्ततो मध्यतो ब्रह्म सर्वतः ।
अनाव्याधां देवपुरां प्रपद्य, शिवा स्योना पतिलोके वि राज ॥

अथर्व० १४. १. ६४

पश्चिम में, पूर्व में, कार्यों के आदि में, अन्त में मध्य में सर्वत्र ब्रह्म को स्मरण रख । इस व्याधिरहित गृहस्थ रूपी देवपुरी में प्रवेश करके तू मङ्गलमयी, सुखदायिनी होती हुई पतिगृह में विराज ।

शिला जैसी कठोर और वीरांगना

इस प्रकार नारी को कर्तव्य कर्मों का उपदेश देकर वेद में यह भी बताया है कि उसे वलवती होना चाहिये । वेद के अनुसार एक ओर वह माधुर्य की मूर्ति है तो दूसरी ओर शिला जैसी कठोर भी है । इसी कठोरता के आदर्श को स्मरण कराने के लिये वेद नववधू को शिलारोहण करता हुआ कहता है—

स्योनं ध्रुवं प्रजायै धारयामि तेऽश्मानं देव्याः पृथिव्या उपस्थे ।
तमातिष्ठानुमाद्या सुवर्चा, दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु ॥

अथर्व० १४. १. ४७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वी देवी के पृष्ठ पर मैं इस अचल पत्थर को रखता हूँ, इस पर तू खड़ी हो, इस कठोर स्पर्श में ही आनन्द अनुभव कर, पत्थर जैसी वीर-वर्चस्विनी बन, सूर्य तेरी आयु लम्बी करे।

विवाह संस्कार की शिलारोहण विधि में पढ़ा जाने वाला आपस्तम्ब गृहसूत्र का वचन इसी वेदमन्त्र का अनुवाद है। उसमें कहा है—"आरोहेममश्मानमश्मेव त्वं स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽववाधस्व पृतनायतः ॥" हे वधू! इस पत्थर पर पैर रख, पत्थर की तरह ही तू सुदृढ़ बन। आक्रमण करने वालों को नीचे दबा दे, सेना द्वारा चढ़ाई करने वाले को पददलित कर दे।

मध्यकाल में वेद की इस दृष्टि को भुला दिया गया, उसे अबल कहा जाने लगा, यहाँ तक कि 'अबला' शब्द नारी का पर्यायवाची ही बन गया। किन्तु वेद की नारी अबला नहीं, वीराङ्गना है। वेद में एक नारी निम्न उद्गार प्रकट करती है—

अवीरामिव मामयं शरारुरभिमन्यते।
उताहमस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा,
विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ऋग्वेद १०. ८६. ८

अरे, यह घातक मुझे अबला समझता है। मैं अबला नहीं, वीराङ्गना हुँ, वीर पत्नी हूँ, मृत्यु से न डरने वाले वीर मेरे सखा हैं। मेरा पति संसार में सबसे उत्कृष्ट है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट् ।
उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः ।

मेरे पुत्र शत्रुहन्ता हैं, मेरी पुत्री विशेष तेजस्विनी है। मैं भी विजयिनी हूँ, और मेरे पति में उत्तम कीर्ति का निवास है।

पति की प्रतिज्ञायें और उसके कर्तव्य

वेद में जहाँ पत्नी के कर्तव्यों का उल्लेख विस्तार से किया गया है, वहाँ साथ ही पति के कर्तव्यों के विषय में भी वेद मौन नहीं है। वैदिक पति किस प्रकार से पत्नी के साथ प्रेमपूर्वक रहता है, यह हम पीछे दिखा आये है। अन्य कर्तव्यों के प्रति भी वह सजग है। वधूका पाणिग्रहण करता हुआ वह प्रतिज्ञा करता है—

येनाग्निरस्या भूम्या हस्तं जग्राह दक्षिणम् ।
तेन गृह्णामि ते हस्तं मा व्यथिष्टा मया सह
प्रजाया च धनेन च ॥ १४, १, ४८

"अग्नि ने जिस प्रकार भूमि रूपी नारी का दाहिना हाथ पकड़ा हुआ है उसी प्रकार मैं तेरा हाथ पकड़ता हूँ। तू मेरे साथ रहती हुई सन्तान से या धन से किसी भी तरह व्यथित नहीं होगी।"

पति को इन शब्दों से सूचना मिल रही है कि जहाँ पत्नी भूमि की तरह विशाल-हृदय, धृतिमती, सहनशील, प्रजननशक्तियुक्त, वात्सल्यरसपूर्ण, कोमल-कठोर-रूप है, वहाँ पति को भी अग्नि की तरह उज्ज्वल, तेजोमय, प्रकाशक ऊर्ध्वगामी होना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये और उसका पत्नी के साथ सम्बन्ध वैसा ही पवित्र और उज्ज्वल होना चाहिये जैसा अग्नि और भूमि का है।

पुनः वह कहता है—

गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं, मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं, त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः॥

भगस्ते हस्तमग्रहीत् सविता हस्तमग्रहीत्।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव॥ अथर्व० १४. १. ४०, ५१॥

सौभाग्य के लिये मैं तेरा पाणिग्रहण करता हूँ जिससे तू मुझ पति के साथ रहती हुई दीर्घायुष्य प्राप्त करे। मैं 'भग' हूँ 'अर्यमा' हूँ, 'सविता' हूँ, 'पुरन्धि' हूँ। देवों ने गृहस्थधर्म का पालन करने के लिये तुझे मेरे सुपुर्द किया है। मैंने साक्षात् 'सविता' होकर तेरा हाथ पकड़ा है। तू आज से मेरी धर्मानुकूल पत्नी है, मैं तेरा गृहपति हूँ।

यहाँ पति अपने आप को 'भग', 'अर्यमा', 'सविता' और 'पुरन्धि' कहता है। भग वेद में ऐश्वर्य का देव है। अपने को 'भग' कहकर वह प्रतिज्ञा करता है कि गृहस्थाश्रम में मैं अपने, तेरे और अन्य परिजनों के उपयोग के लिये पर्याप्त धन उपार्जन करके लाता रहूँगा। तुझे मेरे साथ रहते हुए कभी धन की कमी अनुभव नहीं होगी। मैं साक्षात् धन का देवता बना रहूँगा। फिर वह कहता है कि मैं 'अर्यमा' हूँ। 'अर्यमा' न्याय का देव है। अतः अपने को 'अर्यमा' कहने का भाव है कि मैं इस बात में सदा सतर्क रहूँगा कि मुझसे कभी तेरे प्रति या अन्य किसी कुटुम्बी के प्रति अन्याय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न हो। इसके बाद वह अपने आप को 'सविता' कहता है। 'सविता' प्रेरणा और उत्पत्ति का देव है। इससे वह यह प्रतिज्ञा करता है कि यदि तू कभी मार्ग विमुख होने लगेगी तो तुझे प्रेरणा करना मैं अपना कर्तव्य समझूँगा और सदा शुभ प्रेरणा ही करूँगा। साथ ही मैं अपने अन्दर उत्पादक शक्ति को स्थिर रखने के लिये भी सदा यत्नवान् रहूँगा। फिर वह 'पुरन्धि' नाम से अपने आप को स्मरण करता है। निरुक्तानुसार 'पुरन्धि' का अर्थ है 'बहुधी' अर्थात् बहुत बुद्धिमान्। इसका दूसरा अर्थ 'गृहरूपी पुर का धारण-पालन करने वाला' भी है। अतः अपने आप को पुरन्धि कहकर वह प्रण लेता है कि गृहस्थाश्रम में मैं सदा बुद्धिमान, विवेकी बना रहूँगा और तेरे तथा अन्य परिवार के पालन-पोषण के लिये सदा सजग रहूँगा। पालन-पोषण करने की इस प्रतिज्ञा को और भी स्पष्ट शब्दों में दोहराता हुआ वह आगे कहता है—

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः।
मया पत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम ॥ अथर्व० १४. १. ५२ ॥

हे नारि ! मैं सदा तेरा पालन-पोषण करता रहूँगा, बृहस्पति (वेदज्ञ पुरोहित) ने तुझे मेरे लिये प्रदान किया है। हे प्रजननशक्ति वाली ! तू मुझ पति के साथ सौ वर्ष तक जीवित रह।

सं त्वा नह्यामि पयसा पृथिव्याः, सं त्वा नह्यामि पयसौषधीनाम्।
सं त्वा नह्यामि प्रजया धनेन, सा संनद्धा सनुहि वाजमेमन् ॥
अथर्व० १४. २. ७०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तुझे जल, दूध आदि पार्थिव रसों से घेर दूंगा, मैं तुझे ओषधियों के रस से घेर दूंगा, मैं तुझे सन्तान और धन से घेर दूंगा। इन सबसे घिरी हुई तू इस ऐश्वर्य का उपभोग करना है।

पति को उचित है कि वह पत्नी के रूप गुणों की सदा अपने हृदय में धारण किये रहे। इस बात को कभी न भुलाये कि मेरे पास जो कुछ भी है वह मुझ अकेले का नहीं है, किन्तु उसमें पत्नी का भी साझा है। वह कभी पत्नी से चुराकर कुछ न खाये। इसी प्रतिज्ञा को पति निम्न मन्त्र में ग्रहण कर रहा है—

अहं वि ष्यामि मयि रूपमस्या, वेददित् पश्यन् मनसः कुलायम्।
न स्तेयमद्मि मनसोदमुच्ये स्वयं श्रथ्नानो वरुणस्य पाशान्॥

अथर्व १४. १. ५७

अर्थात् "मैं इस पत्नी के रूप को, सौन्दर्य को, गुणों को अपने अन्दर बाँध लेता हूँ, अपने मन रूपी पक्षी का घोंसला मैं पत्नी को ही समझता हूँ। अतः वहीं अपने मन को विश्राम देता हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि कभी इससे चुराकर कुछ नहीं खाऊँगा, इस विचार को कभी मन में भी नहीं आने दूंगा।......"

पति को चाहिये कि ब्राह्म मुहूर्त में उठकर उषाकाल तक सब नैत्यिक कर्मों से निवृत्त हो ले और सुन्दर स्वच्छ वस्त्र पहन कर दैनिक कार्यों को करने के लिये तैयार हो जाये। दैनिक कर्मों को करते हुए सदा इसका ध्यान रखे कि कहीं मैं पाप में लिप्त न हो जाऊँ। वह कहता है—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवं वसानः सुरभिः सुवासा उदागां जीव उषसो विभातीः ।
आण्डात् पतत्रीवामुक्षि विश्वस्मादेनसस्परि ॥

अथर्व० १४. २. ४४

"मैं नवीन वस्त्र धारण करने से सौरभसम्पन्न और सजीव हो जगमगाती हुई उषा की वेला में कटिबद्ध होकर उठ खड़ा हुआ हूँ। जैसे पक्षी अण्डे से छूटता है, वैसे ही मैं समस्त पापों और मलिनताओं से छूट गया हूँ।"

पति-पत्नी को देवजनों की शुभ कामनायें

इस प्रकार गृहस्थाश्रम के विविध अङ्गों का वर्णन कर चुकने के बाद अन्त में पति-पत्नी के लिये देवजनों के सन्देशों, शुभकामनाओं और आशीर्वादों का उल्लेख कर हम इस चित्रण को समाप्त करते हैं। देवजन जगत् के समस्त पति-पत्नियों के युगलों पर अपने आशीर्वाद के पुण्य अर्पित करते हुए कह रहे हैं—

युवं भगं सं भरतं समृद्धम् ऋतं वदन्तावृतोद्येषु ।
ब्रह्मणस्पते पतिमस्यै रोचय चारु संभलो वदतु वाचमेताम् ॥

अथर्व १४. १. ३१

तुम दोनों व्यवहारों में सदा सत्य बोलते हुए भरपूर धन कमाओ। हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि यह पत्नी तुझ पति के साथ प्यार से रहे, पति भी मधुर-भाषी होकर तुझ पत्नी के साथ रम्य वाणी बोले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इहेमाविन्द्र सं नुद चक्रवाकेव दम्पती ।
प्रजयैनौ स्वस्तकौ विश्वमायुर्व्यश्नुताम् ।। अथर्व १४. २. ६४

प्रभु करे तुम दोनों पति-पत्नी चकवा-चकवा की तरह प्रेम-सूत्र में आबद्ध रहो । तुम्हें सन्तान प्राप्त हो । सुन्दर घर में रहते हुए गृहस्थाश्रम की सारी आयु का उपभोग करते रहो ।

सा मन्दसाना मनसा शिवेन रयिं धेहि सर्ववीरं वचस्यम् ।
सुगं तीर्थं सुप्रपाणं शुभस्पती स्थाणुं पथिष्ठामप दुर्मतिं हतम् ।।
अथर्व १४. २. ६-

हे देवि ! प्रफुल्लचित्त रहती हुई प्रशंसनीय ऐश्वर्य और वीरपुत्र प्राप्त कर । यह गृहस्थाश्रम तुम्हारे लिये खान-पान की वस्तुओं से परिपूर्ण और पुण्यतीर्थ के समान हो । तुम दोनों पति-पत्नी सद्गुणों के अधिपति बनो और दुर्मति को तथा मार्ग में आने वाली वाधा को मार भगाओ ।

त्वष्टा जायामजनयत् त्वष्टास्यै त्वां पतिम् ।
त्वष्टा सहस्रमायूंषि दीर्घमायुः कृणोतु वाम् ।। अथर्व ६. ७८. ३

प्रभु ने इस पति के लिए तुझ पत्नी को जन्म दिया है, प्रभु ने इस पत्नी के लिये तुझ पति को जन्म दिया है । वही प्रभु तुम दोनों की आयु को सुदीर्घ करे । प्रभु करे, तुम दोनों की जोड़ी युग-युग जीती रहे ।

—डा० रामनाथ वेदालंकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलसन्तु मंगलानि

श्रद्धेयं-नालिनी रम्या, पित्रोरानन्द-वर्धिनी ।
यशःपालस्य ग्रीवायां, माल्यायन्ती महीयते ।।
श्रुते शीले च संस्कृत्यां, विन्दाना मधुरां श्रियम् ।
यशःपाल-मनःपद्मे सुचिरं, भ्रमरायताम् ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमङ्गलीरियं वधूः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

मधुपर्क

भूर्भुवः स्वः

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥

यजुर्वेद १३.२७ ॥

हे परमात्मन् ! (ऋतायते) यज्ञ की इच्छा करने वाले पुरुष के लिये (वाताः) वायु (मधु) सरस नीरोग होकर बहे, (सिन्धवः) नदियाँ (मधु) सरस जल को (क्षरन्ति) देवें । (नः) हमारे लिए (ओषधीः) रोग नष्ट करने वाली ओषधियाँ (माध्वीः) माधुर्य युक्त (सन्तु) हों ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

प्रणवप्रभुनादमूल ओंकार,
उसी से हुआ त्रिलोक प्रसार।
वही भूः, वही भुवः, स्वः वही,
सच्चिदानन्द अमर, अविकार ॥
लोक में यजनशील के लिये,
चलें मधुभरित वायु नीरोग।
सरस मधुजल दें नदियाँ हमें,
अमृतप्रद हो मधु औषधियोग ॥

—डॉ० मुंशीराम शर्मा "सोम"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।
यजु० ३०.३

हे (सवितः) सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त (देव) शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, व्यसन और दुःखों को (परासुव) दूर कर दीजिये। (यत्) जो (भद्रम्) कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं (तत्) वह सब हमको (आसुव) प्राप्त कराइये ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

हे देव ! सविता !!
सुख के दाता !!!
सम्पूर्ण विश्व में
जो भी
सुखकर,
हितकर
शुभकर है,
वह सब हमें प्राप्त हो ।
दुःख दुरित हमको न ज्ञात हो ।।

—डॉ० कर्णसिंह ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

मंगलाचरणम्

भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।। ऋक् ३.६२, १०. ।

(भूः) जो प्राण का भी प्राण (भुवः) सम्पूर्ण दुःखों से छुड़ाने वाला (स्वः) स्वयं सुखस्वरूप और अपने उपासकों को सभी सुखों की प्राप्ति कराने वाला है, उस (सवितुः) सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति करने वाले, सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक, समग्र ऐश्वर्य के दाता (देवस्य) कामना करने योग्य, सर्वत्र विजय कराने वाले परमात्मा का जो (वरेण्यम्) अति श्रेष्ठ ग्रहण और ध्यान करने योग्य (भर्गः) सब क्लेशों को भस्म करने वाला, पवित्र, शुद्ध स्वरूप है (तत्) उसको हम लोग (धीमहि) धारण करें (यः) यह जो परमात्मा (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को उस गुण कर्म स्वभावों में (प्रचोदयात्) प्रेरणा करें ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

मंगलाचरणम्

जो प्राण का भी प्राण और दुखमोचक है,
जो सुखस्वरूप है, सुखदायक है ।
उत्पादक है हम, तुम, सबका सर्वजगत् का ।
और प्रकाश से अपने सबको चमकाता है ।
आओ, हम उस परम काम्य को धारण कर लें
और करे वह हमको प्रेरित
अपने दुःखविनाशक शुद्धस्वरूप से ।।

— डॉ० कर्णसिंह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

भुर्भुवः स्वः ।

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः ।
मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥

यजुर्वेद १३.२८॥

(नक्तम्) रात्रि (मधु) निर्विघ्न व्यतीत हो (उत्) और (उषसः) प्रभात काल की वेलायें भी निरूपद्रव हों, (पार्थिवं रजः) यह पार्थिव लोक, जो कि माता के तुल्य रक्षक है (मधुमत्) विषैले जन्तुओं से रहित हो। (नः) हमारा (पिता) पिता के तुल्य रक्षक (द्यौः) अन्तरिक्ष मण्डल (मधु) सुखकारक (अस्तु) हो।'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

अर्चना है प्रभु हमारी
दुरित सारे दूर होवें पंथ हो कल्याणकारी ।
निशा शुभ संदेश लाए, नित्य नूतन स्वप्न देखें ।
गहन-तम के व्यूह में भी, ज्योति-रेखा-छोर पेंखें ।।
उषा की अरुणाभ मादक अंक में जागरण सोए ।
रवि-किरन की सजग बाला ओस के मोती पिरोए ।।
चर अचर भूलोक सारा सुधा-सीकर से तरल हो ।
बने नव पाथेय, कण-कण में छिपा जितना गरल हो ।
व्योम का निस्सीम आंगन पिता-सा आधार बाँटे ।
श्वास प्रति आश्वास पूरित मधुर इतना प्यार बांटे ।।
कर्म-यज्ञ-सुगन्ध फैले, गति रहे सुरभित हमारी ।
अर्चना है प्रभु हमारी ।।

—प्रो० देवेन्द्र 'स्नेही' ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

मधुपर्क

भूर्भुवः स्वः ।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः ।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

यजुर्वेद १३.२९॥

(नः) हमारे लिये (वनस्पतिः) यज्ञोपयुक्त ओषधियाँ या सोम (मधुमान्) माधुर्य गुणयुक्त हों (सूर्यः) सूर्यमण्डल (मधुमान्) सुखकारी (अस्तु) हो, (गावः) सूर्य की किरणे अथवा यज्ञोपयोगी गौ आदि पशु (माध्वीः) रसवाली (भवन्तु) हों ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

वनस्पति रुचें हमें मधुमान,
सूर्य मधुमान, किरण मधुमान ।
दुग्ध दें गोपशु मधुमय हमें,
मधुरता छा जावे अम्लान ॥

—डॉ० मुंशीराम शर्मा "सोम"

देव ! यह वरदान दे दो !
स्वस्थ मानस स्वस्थ तनु में स्वस्थ भाव विधान दे दो।
यज्ञ निष्ठा से करें हम, यज्ञ सामग्री मधुर हों ।
सौम्य औषधियाँ सुलभ हों, सोमरस-से दिव्य स्वर हो ॥
सौर-मंडल से नियत-लय के सदा संदेश आएं।
रश्मिवां रवि की हमें मृदु लोरियों के गीत गाएं ॥
धेनुकें रोमन्थ-रव के मंत्र से घर नित्य जागे।
रहे नित यज्ञाग्नि जलती, दैन्य दुःख की सैन्य भागे ॥
कर्म-सरसिज-कोश गूंजे, मधुर मधुकर गान दे दो—
देव यह वरदान दे दो ॥

—देवेन्द्र 'स्नेही'।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

समञ्ज़न्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
संमातरिश्वा संधाता समु देष्ट्री दधातु नौ ॥

ऋग्वेद १०.८५.४७॥

हे (विश्वेदेवाः) इस यज्ञशाला में बैठे हुये विद्वान् लोग! (समञ्जन्तु) निश्चय करके जाने कि अपनी प्रसन्नतापूर्वक गृहस्थाश्रम में एकत्र रहने के लिये एक दूसरे को स्वीकार करता / कस्ती हूँ कि (नौ) हम दोनों के (हृदयानि) हृदय (आपः) जल के समान (सम्) शान्त और मिले हुये रहेगें, जैसे (मातरिश्वा) प्राणवायु इनको प्रिय है वैसे (सम्) हम दोनों एक दूसरे से सदा प्रसन्न रहेंगे, जैसे (धाता) धारण करने वाला परमात्मा सभी में (सम्) मिला हुआ सब जगत् को धारण करता है वैसे हम दोनों एक दूसरे को धारण करेंगे, जैसे (समुदेष्ट्री) उपदेश करने वाला श्रोताओं से प्रीति करता है वैसे (नौ) हम दोनों की आत्मा एक दूसरे के साथ दृढ़ प्रेम को (दधातु) धारण करे ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

दिव्य शक्ति सम्पन्न देव गण ! हमें दिव्यता दान करो ।
हमें मिला दो, एक बना दो, प्रेम प्रीति से हृदय भरो ।।
पृथिवी अन्तरिक्ष में बहती जल धाराओ ! संबल दो ।
युगल हृदय हों मिले हमारे यथा मिला जल में जल हो ।।
पवन देवता, हमें मिला दो, धाता ! धारण का बल दो ।
देष्ट्री, अग-जग के संचालक, पुण्य प्रेरणा का फल दो ।।

—डॉ० मुंशीराम शर्मा "सोम"

हे देव ! जैसे चर अचर में सुरभि सम है वास तेरा ।
सब तुझी में और सब में है सतत् आवास तेरा ।।
उस तरह सत्ता हमारी भी परस्पर स्वत्व पाए ।
एक हों मन-प्राण दोनों, एकता अमरत्व लाए ।।
प्यार से उपदेष्टा जैसे सभा को बोध देता ।
भाव की उर्मि उठाकर सकल सत्ता शोध देता ।।
उस तरह हे देव ! हम दोनों परस्पर को जगाएं ।
भाव-सुभवनों की पिरोकर प्यार की माला बनाएं ।।
खिले हम मधु-माधवी से यज्ञ-मन-मकरन्द जागे ।।
होम की यह गंध जागे ।।

—प्रो० देवेन्द्र स्नेही ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

ऐक्य कामना

यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनु पवमानो वा ।
हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु ॥

हे वरानने अथवा वरानन ! (यत्) जो तुम (मनसा) अपनी इच्छा से मुझको जैसे (पवमानः) पवित्र वायु (वा) जैसे (हिरण्यपर्णो वैकर्णः) तेजोमय जल आदि को किरणों से ग्रहण करने वाला सूर्य (दूरम्) दूरस्थ पदार्थों और (दिशोऽनु) दिशाओं को प्राप्त होता है, वैसे तुम प्रेम पूर्वक अपनी इच्छा से मुझको प्राप्त होती/होते हो । उस (त्वा) तुमको (सः) वह परमेश्वर (मन्मनसाम्) मेरे मन के अनुकूल (करोतु) करे, और हे (वीर) जो (आप) मन से मुझको (एषि) प्राप्त होते हो, उस आपको जगदीश्वर मेरे मन के अनुकूल सदा रक्खे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

दूरस्थ दिशाओं को जैसे करता है प्राप्त पवित्र पवन ।
किरणों में ज्यों जल को मिश्रित कर लेता दिनकर तेजसदन ।।
मैंने तुमको, तुमने मुझको वैसे ही मन से किया वरण ।
अनुकूल रहें करते जग में हम दोनों मन से प्रियाचरण ।।

—डॉ० मुंशीराम शर्मा "सोम"

हे वरानन/वरानने ! वरण कर लो ।
प्यार का आधार देकर वासना का हरण कर लो ।
भानु-किरणें वायु का संस्पर्श ले जैसे थिरकतीं ।।
सलिल-कण से वाष्प लेकर भूमि के ऊपर बरसतीं ।।
शस्य-श्यामल बन धरित्री सफल हो झांझर बजाती ।
दशः दिशाएँ नाच उठतीं, गीत के सरगम सुनाती ।।
हे वरानन ! ठीक तुम उस भाँति मेरा हाथ ले लो ।
मदिर सुख के उत्स फूटें, मुझे अपने साथ ले लो ।।
हे वरानन/वरानने ! वरण कर लो ।

—प्रो० देवेन्द्र 'स्नेही' ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

भूर्भुवः स्वः ।

अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः ।
वीरसूर्देवृकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

ऋग्वेद १०.८५.४४ ॥

हे वरानने ! (अपतिघ्नी) पति से विरोध न करने वाली तुम जिसके (ओम्) रक्षा करने वाला (भूः) प्राणदाता (भुवः) सब दुःखों को दूर करने वाला (स्वः) सुखस्वरूप और सभी सुखों के देने वाले आदि नाम हैं, उस परमात्मा की कृपा और अपने उत्तम पुरुषार्थ से हे (अघोरचक्षुः) प्रिय दृष्टि (एधि) हो, (शिवा) मंगल करने वाली (पशुभ्यः) सब पशुओं को सुखदाता, (सुमनाः) पवित्रान्तःकरणयुक्त, प्रसन्न चित्त, (सुवर्चाः) सुन्दर शुभ-गुण कर्म स्वभाव और विद्या से सुप्रकाशित (वीरसूः) वीर पुरुषों को उत्पन्न करने वाली (देवृकामा) देवर की कामना करती हुई (स्योना) सुखयुक्त होकर (नः) हमारे (द्विपदे) मनुष्यादि के लिये (शम्) सुख करने वाली (भव) सदा हो और (चतुष्पदे) गाय आदि पशुओं को भी (शम्) सुख देने वाले हो, वैसे ही मैं तेरा पति भी व्यवहार किया करूँ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

न मैं निज पति का करूं विरोध,
न हो प्रिय पति मेरे प्रतिकूल ।
बनें पशुपालन हित शिवरूप,
सुवर्चा सुमना सुषमामूल ॥
करें उत्पन्न वीरसन्तान,
प्राप्त हो देवर को भी स्नेह ।
चतुष्पद द्विपद प्रेम से भरा,
सुखद हो हम दोनों का गेह ॥

—डॉ० मुंशीराम शर्मा "सोम"

ईश की हो वरद छाया
कर्म में विश्वास के आलोक ने हो गीत गया ।
दृष्टि में प्रियता रहे, हों सुखद-मंगल-मूर्छनाएँ ।
विमल-अन्तःकरण के स्वर विभा के वैभव लुटाएँ ।
सदा समताभाव जागे, वीर हो संतान तेरी ।
स्नेह देवर पर रहे नित, हो सुगंधित आन तेरी ।
हाथ में जादू जगे यह, आग पर कलियाँ उगा दे ।
नहीं केवल मनुज, प्राणी मात्र पर ममता जगा दे ॥
मैं चलूंगा साथ तेरे, हाथ जब तूने थमाया ।
ईश की हो वरद छाया ॥

—प्रो० देवेन्द्र 'स्नेही' ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

[ओ३म्]

पाणिग्रहण मन्त्र (१)

ग्रभ्णामिते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः ।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ॥

ऋग्वेद १०.८५.३६॥

हे वरानने ! जैसे मैं (सौभगत्वाय) ऐश्वर्य सुसन्तानादि सौभाग्य की बढ़ती के लिये (ते) तेरे (हस्तम्) हाथ को (गृभ्णाभि) ग्रहण करता हूँ, तू (मया) मुझ (पत्या) पति के साथ (जरदष्टिः) जरावस्था को सुखपूर्वक प्राप्त (असः) हो, तथा हे वीर ! मैं सौभाग्य की वृद्धि के लिये आपके हस्त को ग्रहण करती हूँ। आप मुझ पत्नी के साथ वृद्धावस्था पर्यन्त प्रसन्न और अनुकूल रहिये। आपको मैं और मुझको आप आज से पति-पत्नी मानकर के प्राप्त हुये हैं, (भगः) सकल ऐश्वर्ययुक्त (अर्यमा) न्यायकारी (सविता) सब जगत् की उत्पत्ति का कर्ता (पुरन्धि) बहुत प्रकार के जगत् का कर्ता परमात्मा और (देवाः) ये सब सभा-मण्डल में बैठे हुये विद्वान् लोग (गार्हपत्याय) गृहाश्रम कर्म के अनुष्ठान के लिये (त्वा) तुझको (मह्यम्) मुझे (अदुः) देते हैं। आज से मैं आपके हस्ते और आप मेरे हाथ विक चुके हैं, कभी एक दूसरे का अप्रियाचरण न करेंगे ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म]

वरानने, सौभाग्य हेतु मैं हाथ तुम्हारा पकड़ रहा।
मेरे साथ जरावस्था तक चले प्राण की प्रगति महा॥
जो विभूतिमय, न्याय-नियन्ता, विविध-जगत-कर्ता-धर्ता।
किया उन्हीं देवों ने मुझको गार्हपत्य हित तव भर्ता॥

—डॉ० मुंशीराम शर्मा "सोम"।

"मेरे जीवन के उपवन में
सुख-सुमनों के सौरभ-सी सौभाग्यदायिनी।
वरानने ! आज तुम्हारा शुभ कर धरकर हो गया धन्य मैं।"
"हे वीर ! तुम्हारे कर का ले अवलम्बन, आशान्वित-
हूँ, जीवन भर अनुकूल रहोगे, हंसते-गाते कर्मनिरत।"
"हम गृहस्थ के कर्मयज्ञ में ऋत्विज बनकर,
साथ करेंगे अनुष्ठान धर्माश्रित अर्थ काम का सन्तत॥"

—प्रो० सेवाराम शर्मा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

पाणिग्रहण-मन्त्र (२)

भगस्ते हस्तमग्रभीत् सविता हस्तमग्रभीत् ।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव ॥

अथर्ववेद १४.१.५१ ॥

हे प्रिये ! (भगः) ऐश्वर्ययुक्त मैं (ते) तेरे (हस्तम्) हाथ को (अग्रभीत्) ग्रहण करता हूँ तथा (सविता) धर्मयुक्त मार्ग में प्रेरक मैं तेरे (हस्तम्) हाथ को (अग्रभीत्) ग्रहण कर चुका हूँ, (त्वम्) तू (धर्मणा) धर्म से मेरी (पत्नी) भार्या (असि) है और (अहम्) मैं धर्म से (तव) तुम्हारा (गृहपतिः) गृहपति हूँ। हम दोनों मिलकर घर के कर्मों की सिद्धि करें और जो दोनों का अप्रियाचरण व्यभिचार है उसको कभी न करें, जिससे घर के सब काम सिद्ध, उत्तम सन्तान, ऐश्वर्य और सुख की बढ़ती सदा होती रहे ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

मैं विभूतियुत हाथ पकड़ तव प्रिय सविता कहलाता हूँ ।
धर्म सहित तुम पत्नी मेरी मैं गृह-पति पद पाता हूँ ।।

—डॉ० मुंशीराम शर्मा "सोम" ।

प्रिय ! तुम्हारे हाथ का जब ग्रहण मैंने कर लिया ।
संसार की शुचि संपदा का वरण जैसे कर लिया ।।
यह हाथ मेरी प्रेरणा का स्रोत, पावन धर्म के–
पथ में रहेगा मार्ग-दर्शक रूप मे मेरे लिए ।
तुम धर्म से हो आज मेरी भार्या सहधर्मिणी,
तुम मूर्त्त हर्षोल्लास हो, साकार प्रणय प्रकाश हो ।
मैं धर्म से गृहस्वामी बनकर प्राप्त कर लूँगा सभी
सहयोग से तेरे प्रिये ! हर सफलता संसार की ।।

—प्रो० सेवाराम शर्मा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

पाणिग्रहण-मन्त्र (३)

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः ।
मया पत्या प्रजावति शं जीव शरदः शतम् ॥

अथर्ववेद १४.१.५२ ॥

(वर की ओर से)

हे अनघे ! (बृहस्पतिः) सब जगत् को पालन करने हारे परमात्मा ने जिस (त्वा) तुझको (मह्यम्) मुझे (अदात्) दिया है (इयम्) यही तू जगत् भर में (मम) मेरी (पोष्या) पोषण करने योग्य पत्नी (अस्तु) हो, हे (प्रजावति) तू (मया पत्या) मुझ पति के साथ (शतम्) सौ (शरदः) शरद् ऋतु अर्थात् शत-वर्ष पर्यन्त (शं जीव) सुखपूर्वक जीवन धारण कर ॥

(वधू की ओर से)

हे भद्रवीर ! परमेश्वर की कृपा से आप मुझे प्राप्त हुये हो, मेरे लिये आपके विना इस जगत् में दूसरा पति अर्थात् स्वामी पालन करने हारा देव कोई नहीं है, न मैं आप से अन्य किसी दूसरे को मानूंगी । जैसे आप मेरे सिवाय दूसरी किसी स्त्री से प्रीति न करोगे वैसे मैं भी किसी दूसरे पुरुष के साथ प्रीति-भाव से प्रेम न करूंगी । आप मेरे साथ सौ वर्ष पर्यन्त आनन्द से प्राण धारण कीजिये ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

"इस जग के पोषक, पालक,
प्रभु की इच्छा से पाया तुमको ।
पोषणीय तुम मेरी जगतीतल में
प्रेम पात्र हो केवल ॥
मेरी वंश-वल्लरी होगी,
तुम से पुष्पित और फलित भी ।
शत वर्षों तक सुखद, स्वस्थ,
जीवन का संबल बन जाओगी ॥
यही भावना है कल्याणी-
शक्ति के भण्डार तुम्हारे—
आगे करनी व्यक्त मुझे,
है निश्छल मन से ॥
तुम्हें छोड़कर अखिल-
विश्व में मानूंगी नहीं ।
किसी को अपना स्वामी,
पालक, प्रणयी परमदेवता ॥"
शतवर्षीय जीवन की
अविरल अटल धुरा का
वहन, अनोखी प्रीतिका
संसार, सजाकर ॥" —प्रो० सेवाराम शर्मा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

पाणिग्रहण-मन्त्र (४)

त्वष्टा वासो व्यदधाच्छुभे कं बृहस्पते प्रशिष्या कवीनाम् ।
तेनेमां नारीं सविता भगश्च सूर्यामिव परिधत्तां प्रजया ॥

अथर्ववेद १४.१.५३.

हे शुभानने ! जैसे (बृहस्पतेः) इस परमात्मा की सृष्टि में और उसकी तथा (कवीनाम्) आप्त विद्वानों की (प्रशिष्या) शिक्षा से दम्पति होते हैं, (त्वष्टा) जैसे विजली सबको व्याप्त हो रही है, वैसे तू मेरी प्रसन्नता के लिये (वासः) सुन्दर वस्त्र (शुभे) और आभूषण तथा (कम्) मुझ से सुख को प्राप्त हो, इस मेरी और तेरी इच्छा को परमात्मा (व्यदधात्) सिद्ध करे। जैसे (सविता) सकल जगत् की उत्पत्ति करने हारा परमात्मा (च) और (भगः) पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त (प्रजया) उत्तम प्रजा से (इमाम्) इस तुझ (नारीम्) मुझ नर की स्त्री को (परिधत्ताम्) आच्छादित, शोभायुक्त करे, वैसे मैं (तेन) इस सबसे (सूर्याम् इव) सूर्य की किरण के समान तुझको सब वस्त्र और भूषणादि से सुशोभित सदा रखूंगा तथा हे प्रिय ! आपको मैं इसी प्रकार सूर्य के समान सुशोभित आनन्द अनुकूल प्रियाचरण करके (प्रजया) ऐश्वर्य वस्त्राभूषण आदि से सदा आनन्दित रखूंगी ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

शुभे ! करो धारण, आभूषण, पहनो वस्त्र रुचिर शोभन ।
घनदामिनी समान करें हम शोभित प्यारा व्योम भुवन ॥
प्रकृति-पुरुष की इस लीला में कवियों की शिक्षाओं से ।
लें हम अपना भाग, पूर्ण हों, संस्कृत हों दीक्षाओं से ॥
सविता जैसे निज किरणों से जगभर को ढक देता है ।
भग-ऐश्वर्य-दान बिखराकर सबके दुःख हर लेता है ॥
मैं भी करूं सुशोभित तुमको करो सुशोभित तुम मुझको ।
प्रजा-पुत्र धन-धान्य-दुग्ध--घृत हरे हमारे भव रुज को ॥

—डॉ० मुंशीराम शर्मा "सोम"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

पाणिग्रहण-मन्त्र (५)

इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी मातरिश्वा मित्रावरुणा भगो अश्विनोभा ।
वृहस्पतिर्मरुतो ब्रह्मसोम इमां नारीं प्रजया वर्धयन्तु ॥

अथर्ववेद १४.१.५४

हे मेरे सम्बन्धी लोगो ! जैसे (इन्द्राग्नी) विजली और प्रसिद्ध अग्नि, (द्यावापृथिवी) सूर्य और भूमि, (मातरिश्वा) अन्तरिक्षस्थ वायु (मित्रावरुणा) प्राण और उदान तथा (भगः) ऐश्वर्य, (अश्विना) सद्वैद्य और सत्योपदेशक (उभा) दोनों (वृहस्पतिः) श्रेष्ठ न्यायकारी बड़ी प्रजा का पालन करने हारा राजा, (मरुतः) सभ्य मनुष्य, (ब्रह्मा) सबसे बड़ा परमात्मा और (सोमः) चन्द्रमा तथा सोमलता आदि औषधीगण सब प्रजा की. वृद्धि और पालन करते हैं वैसे (इमां नारीम्) इस मेरी स्त्री को (प्रजया) प्रजा से बढ़ाया करते हैं, वैसे तुम भी (वर्धयन्तु), बढ़ाया करो । जैसे मैं इस स्त्री को प्रजा आदि से बढ़ाया करूंगा वैसे स्त्री भी प्रतिज्ञा करे कि मैं भी इस मेरे पति को सदा आनन्द, ऐश्वर्य और प्रजा से बढ़ाया करूंगी । जैसे ये दोनों मिलकर प्रजा को बढ़ाया करते हैं, वैसे मैं और तू मिलकर गृहाश्रम के अभ्युदय को बढ़ाया करें ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ इन्द्राग्नी तडित-दामिनी, ओ द्यावा-पृथिवी देवी !
पवन, अपान-प्राण, भग, अश्विन, तुम सन्तत संसृति-सेवी ।।
पिता बृहस्पति, मरुत, ब्रह्म, हे सोम ! हमें संवर्धन दो ।
करें अभ्युदय हम दोनों मिल. ऐसा जीवन साधन दो ।।

—डॉ० मुंशीराम शर्मा "सोम"

चाहता हूँ आज मित्रों, वन्धुओं, सम्बन्धियों-
के वर्ग से शुभ कामनाओं की मनोरम सम्पदा ।
मेरी इस प्रिय पत्नी को अभिवृद्धि का सौभाग्य का
वनकर सफल कारण-रहे कल्याण-दा ।
क्योंकि चारों ओर जगती में विपुल कल्याण की
बह रही है अमित धारा प्रजा के हित सर्वदा ।
चाहता हूँ आज, हम दोनों प्रणय आबद्ध हों,
क्षेम से, आमोद से, अभिवृद्धि के सयोग से,
दें इस गृहस्थी की अमर गरिमा बढ़ा ।।

—प्रो० सेवाराम शर्मा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

पाणिग्रहण-मन्त्र (६)

अहं विष्यामि मयि रूपमस्या वेददित्पश्यन्मनसा कुलायम् ।
न स्तेयमद्मि मनसोदमुच्ये स्वयं श्रथ्नानोवरुणस्य पाशान् ।।

अथर्ववेद १४.१.५७

हे कल्याण क्रोड़े ! जैसे (मनसा) मन से (कुलायम्) कुल की वृद्धि को (पश्यन्) देखता हुआ (अहम्) मैं (अस्याः) इस तेरे (रूपम्) रूप को (विष्यामि) प्रीति से प्राप्त और इनमें प्रेम द्वारा व्याप्त होता हूँ, वैसे यह तू मेरी वधू (मयि) मुझ में प्रेम से व्याप्त होकर अनुकूल व्यवहार को (वेदत्) प्राप्त होवे । जैसे मैं (मनसा) मन से भी इस तुझ वधू के साथ (स्तेयम्) चोरी को (उद्मुच्ये) छोड़ देता हूँ और किसी उत्तम पदार्थ का चोरी से (नद्मि) भोग नहीं करता हूँ (स्वयम्) आप (श्रथ्नानः) पुरुषार्थ से शिथिल होकर भी (वरुणस्य) उत्कृष्ट व्यवहार में विघ्न रूप दुर्व्यसनी पुरुष के (पाशान्) बन्धनों को दूर करता रहूँ, वैसे (इत्) ही यह वधू भी किया करे । इसी प्रकार वधू भी स्वीकार करे कि मैं भी इसी प्रकार आप से वर्ता करूंगी ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

कुल की वृद्धि सामने रखकर व्याप्त हो रहा मैं तुम में ।
मेरा प्रेम प्राप्त है तुमको तेरा प्रेम व्याप्त मुझ में ॥
निश्छल मन से सानुकूल रह दोनो का व्यवहार चले ।
भोग और पुरुषार्थ प्रबल हों जिसमें पाप प्रमाद जले ॥
विघ्नरूप दुर्व्यसन-पाश को दूर हटावें निज बल से ।
प्रभु का वरद हस्त हो शिर पर, अभिमण्डित हों मंगल से ॥

—डॉ० मुंशीराम शर्मा "सोम"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

प्रतिज्ञा-परिक्रमा

अमोऽहमस्मि सा त्वं सामाहमस्म्यृक्त्वं पृथिवी त्वम् ।
ताविह संभवाय प्रजामाजनयावहै ॥

अथर्व० १४.२७

हे वधू ! जैसे (अहम्) मैं (अमः) ज्ञानवान्, ज्ञानपूर्वक तेरा ग्रहण करने वाला (अस्मि) होता हूँ वैसे (सा) सो (त्वम्) तू भी ज्ञान पूर्वक मेरा ग्रहण करने वाली (असि)है, (अहम्) मैं 'साम) सामवेद के तुल्य प्रशंसित (अस्मि) हूँ, हे वधू ! तू (ऋक्) ऋग्वेद के तुल्य प्रशंसित है, (त्वम्) तू (पृथिवी) के समान गर्भादि गृहाश्रम के व्यवहारों को धारण करने वाली है और मैं (द्यौ) वर्षा करने वाले सूर्य के समान हूँ, वह तू और मैं (तौ) दोनों ही (इह) इस संसार में (संभवाय) मानवीय गुणों के विकास और लोकयात्रा की सिद्धि के लिये (प्रजाम्) दीर्घजीवी सन्तान को (आजनयावहै) उत्पन्न करें ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

मैं, तुम, शाश्वत गुञ्जित गुञ्जन
चिति चैतन्य मिलें हम ऐसे ।
जैसे वेद ऋचामय वाणी ।।
प्राणों के मधुमय संगम से ।
समुद्भूत नव चेतन प्राणी ।।
तुम सौरभ, मैं शीतल चन्दन
मैं, तुम, शाश्वत गुञ्जित गुञ्जन ।

मधुमय मिलन धरा अम्बर का ।
कहता सुन्दर सुखद कहानी ।।
मिटे भेद बाहर अन्तर का
सरिता सागर एक अमानी ।।
मैं सुखसाधक तुम सुख साधन ।
मैं, तुम शाश्वत गुञ्जित गुञ्जन ।।

विश्व विटप के बने बीज हम ।
रसमय नवल फलों के स्रष्टा ।।
रहे नेहमय दृष्टि हमारी
हम तुम बनें स्नेह के द्रष्टा ।।
तुम तृष्णा मैं सुन्दर सावन ।
मैं, तुम, शाश्वत गुञ्जित गुञ्जन ।।

जगन्नाथ व्यास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

शिलारोहण

आरोहे ममश्मानमश्मेव त्वं स्थिरा भव ।
अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः ॥

पारस्कर १.७.१

हे देवि ! (इमम्) इस (अश्मानम्) पत्थर के ऊपर (आरोह) चढ़ और (अश्मा) इस पत्थर के (इव) तुल्य (त्वम्) तू धर्मकार्य में (स्थिरा) दृढ़ (भव) हो। (पृतन्यतः) कलहकारियों को (अभि) आक्रमण करके दबा करके (तिष्ठ) स्थित हो और (पृतनायतः) उन जनसमूहों को लेकर लड़ाई के लिये यत्न करने वालों को भी (अव) नीचा करके (बाधस्व) पीड़ित कर—भग्नोद्यम बना ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

दृढ़ता से बैठो इस प्रस्तर आसन पर तुम
गार्हस्थ्य-चक्र का तुम्हें प्रवर्तन करना है,
गार्हस्थ्य, जो कि है केन्द्र स्थल
सारे जीवन-व्यवहारों का
कर्त्तव्य और सुविचारों का
हे देवि, तुम्हें करने होंगे संघर्ष प्रबल,
हैं तुम्हें दबाने अन्धकार के दुराक्रमण
आलोकित कर जीवन के क्षण,
रजतोपम धरती के रज-कण ॥

—प्रो॰ गिरिजाशंकर त्रिवेदी

हे देवि ! स्वयं तुम दृढ़ होकर,
इस दृढ़ पत्थर पर चरण धरो ।
धर्म-कार्य में सदा रहो दृढ़,
अन्याय, अनीति का दमन करो ॥

—डॉ॰ कर्णसिंह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

लाजाहोम

अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत ।
स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः ।।

कन्या की उक्ति

(कन्याः) कन्यायें (अर्यमणम्) न्यायकारी नियन्ता (अग्नि देवम्) जिस पूजनीय देव ईश्वर की (अयक्षत) पूजा करती हैं (सः) वह (अर्यमा देवः) न्यायकारी दिवास्वरूप परमात्मा (नः) हमको (इतः) इस कुल से (प्रमुञ्चतु) छुड़ावें और (पतेः) पति के साहचर्य से (मा) न छुड़ावें ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे जगन्नियन्ता अग्निदेव !
तुम हो कुलवधुओं के सुहागरक्षणकारी
हे ज्योतिर्मय, कल्याण, न्याय के व्रतधारी
मर्यादा, नीति-व्यवस्था के सर्जक महान्
मैं पत्नी, पितृकुल में ममता की छाया में
दुर्लभ दुलार मां का, वात्सल्य पिताजी का,
भैय्या बहिनों का अपनापन
यह वैभव जिसके सम्मुख है नगण्य कञ्चन
हे विधि-विधानकारी मुझ से यह पितृवंश छूटता,
मगर, है विनय देव !
मैं बनूं प्राणपति की काया की छाया,
नयनों की चितवन,
उनके उर की अविरल धड़कन,
हम कभी न बिछुड़ें हो चाहे वह बीहड़ वन
या राग-पराग भरा मधु माधव का उपवन
ज्यों अम्बर की नीलिमा, धरा का सौंधापन
ज्यों चाँद-चाँदनी, सूर्य-प्रभा, ज्यों शब्द-अर्थ
त्यों ईश ! हमारा रहे सनातन साहचर्य ॥

—प्रो० गिरिजाशंकर त्रिवेदी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

लाजाहोम

इयं नार्युप ब्रूते लाजानावपन्तिका ।
आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम ।

पारस्कर काण्ड १ कण्डिका ६.

(लाजान्) भुने हुये चावल खीलों को (आवपन्तिका) अग्नि में छोड़ने वाली (इयम्) यह (नारी) स्त्री (उपब्रूते) पति के समीप कहती है कि (मे) मेरा (पतिः) पति ईश्वर की कृपा से (आयुष्मान्) दीर्घ जीवी (अस्तु) हो और (मम) मेरे (ज्ञातयः) कुटुम्ब के लोग (एधन्ताम्) धन-धान्य आदि से बढ़ें ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

लाजाहोम करे यह कन्या पति-समीप विराज रही।
"सुखी रहे जीवनधन मेरा' पति की आयु याच रही।
"अमर रहे पितृकुल मेरा, धन-धान्य भरा आगार रहे।
माता--पिता नीरोग रहें और भाई-बहिन में प्यार रहे" ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

लाजाहोम—

इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव ।
मम तुभ्यं च संवनन तदग्निरनुमन्यतामियम् ।।

पारस्कर काण्ड १ कण्डिका ६

हे पते ! (इयम्) यह मैं (तव) तेरी (समृद्धिकरणम्) वृद्धि के लिये (इमान्) इन (लाजान्) खीलों को (अग्नौ) अग्नि में (आवपामि) छोड़ती हूँ । (मम्) मेरा (च) और (तुभ्यम्) तेरा (संवननम्) परस्पर अनुराग हो (तत्) उसमें (अग्निः) पूजनीय परमात्मा (अनुमन्यताम्) सहायक हो ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

प्रिय ! हम जग का वैभव पायें ।
अम्बर हिमकण नित्य बिखेरें ।
ज्योतिर्मय हो धरा सबेरे ॥
सुख समृद्धि सब भरे भाग्य में ।
लाजा हवन तुम्हारे मेरे ॥
स्नेह शक्ति के गायन गायें ।
प्रिय ! हम जग का वैभव पायें ॥

यह जग सुखद प्रेम का बन्धन ।
प्रकृत्ति पुरुष का यह अवलम्बन ॥
सदा एक रस एक मना हम ।
हो अभिन्नता का अभिनन्दन ॥
हम, सबको, सब हमको पायें ।
प्रिय ! हम जग का वैभव पायें ॥

जीवन का सुख सञ्चित सरगम ।
सबका मंगल हो हृदयङ्गम ॥
सकलैश्वर्यं भरे आँगन में ।
छाये नहीं अज्ञता का तम ॥
इस वसुधा को स्वर्ग बनायें ।
प्रिय ! हम जग का वैभव पायें ॥

—प्रो० जगन्नाथ व्यास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

हस्ताञ्जलिग्रहण

सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनिवति । यान्त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः । यस्यां भूतं समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् । तामद्य गाथां गास्यामियास्त्रीणामुत्तमं यशः ॥

पारस्कर १.६.२.

(सुभगे) सुन्दर ऐश्वर्य वाली ! (वाजिनिवति) अन्नादि सम्पत्ति वाली हे (सरस्वति) वीणा आदि पदार्थों की कारणीभूत प्रकृति !! (इदम्) इस हवनादि कर्म की (प्रअव) अच्छी प्रकार रक्षा कर। (अस्य) इस दृश्यमान (विश्वस्य) सब (भूतस्य) पृथिव्यादि की (याम्) जिस (त्वा) तुझको (अग्रतः) स्थूल सृष्टि के पूर्व कारण रूप से विद्यमान (प्रजायाम्) उत्पादन करने वाली को विद्वान् लोग कहते हैं । (यस्याम्) जिस तुझमें (भूतम्) पृथिव्यादि (समभवत्) उत्पन्न हुआ है और (यस्याम्) जिस तुझमें (इदम्) यह (विश्वम्) सम्पूर्ण (जगत्) जगत् ही उत्पन्न होकर विद्यमान है (अद्य) आज से (ताम्) उसी तेरे प्रति (गाथाम्) गुण, प्रभाव, स्तुति का (गास्यामि) गान किया करूंगा (या) जो गाथा सुनने पर (स्त्रीणाम्) स्त्रियों के लिये (उत्तमम्) श्रेष्ठ (यशः) कीर्ति को देती है।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

पञ्चभूतमय स्थूल जगत् की तुम कारण हो
तुम ही सारे ऐश्वर्यों, धन, धान्यों की जननी हो
तुम सरस्वती हो मूल प्रकृति, आधार विश्व का
कहते हैं विद्वान् तुम्हीं हो बीज सृष्टि का ।
हे परम शक्ति मैं नत-मस्तक हूँ तेरे आगे,
गीत तुम्हारी गुण-गरिमा के मैं गाऊँगा ।
तेरे यश की गाथायें हों व्याप्त भुवन में
नारी-गण की कीर्त्ति-पताका बन झूमेगी ।
तुम हो परम प्रेरणा, तुम पर आधारित है,
यह प्रपञ्च, भू, अन्तरिक्ष से देव लोक तक ।।
जब-जब जीवनपथ में हम दोनों का, देवि !
होगा भ्रान्त विवेक, मार्ग-दर्शन तुम दोगी ।।

—प्रो० सेवाराम शर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्यां वहतुना सह ।
पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह ॥

ऋग्वेद १०.८५.३८

हे (अग्ने) पूजनीय परमात्मन् । (तुभ्यम्) तुम्हारे लिये, तुम्हारी ही परिचर्या के लिये (अग्रेपरि अवहन्) पूर्व वा प्रधान रूप से इस कन्या को स्वीकार किया है, वह कन्या (सूर्याम्) की दी हुई शोभा को (वहतु) प्राप्त हो और (सह) साथ ही (ना) इसका पतिरूप पुरुष भी प्रतिष्ठादिजन्य शोभा को प्राप्त हो। (पुनः) कालान्तर में (प्रजया-सह) पुत्रों के साथ (पतिभ्यः) मुझ पति के लिये (जायाश्) भार्यात्व को प्राप्त हुई इस कन्या को (दाः) सौभाग्य दीजिये ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

हे परमात्मन् !
प्रभो ! अग्ने !
तुम्हारी ही
पूजा, अर्चना के लिये
मैंने इस कन्या का
भार्यात्व स्वीकारा है।
तुम्हीं से प्राप्त सौन्दर्य ने
इसका रूप सँवारा है।
अब
मैं हूँ, यह है, तुम हो.
हमें ऐसा सौभाग्य दो,
कि
हम प्रजायुक्त होकर
जो चाहें
वही हमारा भाग्य हो ॥

—डॉ० कर्णसिंह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

कन्यला पितृभ्यः पतिलोकं पतीयमपदीक्षामयष्ट ।
कन्या उत त्वया वयं धारा उदन्या इवाति गाहेमहि द्विषः ॥
मं० ब्रा० १.२.५.

(कन्यला) यह कन्या (पितृभ्यः) पिता, भ्राता आदि को (अप) छोड़कर (पतिलोकम्) पति के गृह के प्रति (पतीयम्) पति सम्बन्धी (दीक्षाम्) नियम को (अयष्ट) स्वीकार कर चुकी है (उत) और (कन्या) यह कन्या (त्वया) उससे भिन्न मुझ पति व्यक्ति के साथ ही सर्वथा रहे, जिससे कि (वयम्) हम मिलकर (उदन्याः) जल की वेगवाली (धारा इव) धाराओं की तरह, जैसे प्रवल धारयें अपने सम्मुख आने वाले तृणादि को बहाकर ले जाती हैं वैसे ही (द्विषः) कामादि शत्रुओं को (अति) उल्लंघन करके पश्चात् (गाहेमहि) विलोडन करें—दबावें ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

चारुशीला ये कुमारी, कंत की अनुगामिनी बन-
छोड़ती है मातृघर को, सुभग इसके पंथ होवें ।।
वेगवाली सरितधारा, तृणकणों को ज्यों बहाये ।
आंतरिक हम रिपुदलों पर, आत्मबल से विजय पायें ।।

—श्री शंकरदेव विद्यालंकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सप्तपदी (१)

इषे एकपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान्
विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥

आश्वलायन १.८.१९

हे कन्ये ! (इषे) अन्नादि के लिये तू (एकपदी भव) एक पैर चलने वाली हो और (सा) वही तू (माम्) मेरे (अनुव्रता) अनुकूल हो, तेरी अनुकूलता सम्पादन के निमित्त (विष्णुः) व्यापक परमात्मा (त्वा) तुझे (आनयतु) अच्छी प्रकार प्राप्त करे। हम तुम दोनों मिलकर (बहून्) बहुत से (पुत्रान्) पुत्रों को (विन्दावहै) प्राप्त करें और (ते) वे पुत्र (जरदष्टयः) वृद्धावस्था पर्यन्त जीने वाले (सन्तु) हों ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सुमुखि ! प्रथम पग बढ़े तुम्हारा ।
सुजला सुफला शस्यशालिनी,
भारतमाता कृषि विलासिनी ।
उसी धान्य हित हो श्रम सारा ।
सुमुखि ! प्रथम पग बढ़े तुम्हारा ॥
व्यञ्जन भोज प्रसाद मधुर रस,
अन्न प्राण-पोषण सुख सरबस,
जिससे राष्ट्र समृद्ध हमारा ।
सुमुखि ! प्रथम पग पढ़े तुम्हारा ॥
मेरी अनुव्रता हो, उस हित–
व्यापक प्रभु सहयोगी हो नित,
प्राप्त करें मिल चिरजीवी सुत ।
जिन्हें जरा वय मिले किनारा ॥
सुमुखि ! प्रथम पग बढ़े तुम्हारा ॥

—श्री विश्वम्भरदत्त मिश्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सप्तपदी (२)

ऊर्ज्जे द्विपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान्
विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥

आश्वलायन १. ८. १६.

(ऊर्ज्जे) बल सम्पादन के लिये (द्विपदी) दूसरा पैर चलने वाली (भव) हो और (सा) वही तू (माम्) मेरे (अनुव्रता) अनुकूल हो, तेरी अनुकूलता सम्पादन के लिये (विष्णुः) व्यापक परमात्मा (त्वा) तुझे (आनयतु) अच्छी प्रकार प्राप्त करे। हम तुम दोनों मिलकर (बहुत्) बहुत से (पुत्रान्) पुत्रों को (विन्दावहै) प्राप्त करें और (ते) वे पुत्र (जरदष्टयः) वृद्धावस्था पर्यन्त जीने वाले (सन्तु) हों ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सहचरि ! रख दूसरा चरण ।
बल के लिये जो कि संबल है,
विजय-वीर-पौरुष का हल है,
अनुगामिनी सदा रह मेरी
जीत सकूँ जीवन-रण ।
सहचरि ! रख दूसरा चरण ॥

व्यापक विभु तेरे हित अनुगत,
कन्ये ! अन्य बने तेरा व्रत,
हम तुम दोनों ही मिलकर बहु-
पुत्र लाभ का करें वरण ।
जिनकी स्वाँसे श्वेत केश तक
बूढ़े पन तक-हों न क्षरणः
सहचरि ! रख दूसरा चरण ॥

—श्री विश्वम्भरदत्त मिश्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सप्तपदी (३)

रायस्पोषाय त्रिपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ।

आश्वलायन १.८.१६

(रायस्पोषाय) धन अथवा ज्ञान की पुष्टि के लिये (त्रिपदी) तीसरा पैर चलने वाली (भव) हो और (सा) वही तू (माम्) मेरे (अनुव्रता) अनुकूल हो, तेरी अनुकूलता सम्पादन के लिये (विष्णुः) व्यापक परमात्मा (त्वा) तुझे (आनयतु) अच्छी प्रकार प्राप्त करे। हम तुम दोनों मिलकर (बहून्) बहुत से पुत्रों को (विन्दावहै) प्राप्त करें और (ते) वे पुत्र (जरदष्टयः) वृद्धावस्था पर्यन्त जीने वाले (सन्तु) हों ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

जीवन-पथ में रख तृतीय डग ।
नव सुहागिनी प्रगतिशील पग ॥
युग में धर्म, काम, धन के सुख,
वैभव, श्री, ऐश्वर्य, अर्थसुख,
ज्ञानपुष्टि, धनतुष्टि हेतु अयि !
हो, अनुकूलवर्तिनी सुखमयि !
वरद विष्णु हों, बहु तनयों को-
पावें, ऐसे पलित वयों को
करें सुसंस्कृत जो कि आर्यजग ।
जीवन पथ में रख तृतीय पग ॥

—श्री विश्वम्भरदत्त मिश्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सप्तपदी (४)

मायो भव्याय चतुष्पदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥

आश्वलायन १.८.१९

(मायो भव्याय) सुख की उत्पत्ति के लिये (चतुष्पदी) चौथा पैर चलने वाली (भव) हो और (सा) वह तू (माम्) मेरे (अनुव्रता) अनुकूल हो, तेरी अनुकूलता सम्पादन के लिये (विष्णुः) व्यापक परमात्मा (त्वा) तुझे (आनयतु) अच्छी प्रकार प्राप्त करे। हम तुम दोनों मिलकर (बहून्) बहुत से (पुत्रान्) पुत्रों को (विन्दावहै) प्राप्त करें और (ते) वे पुत्र (जरदष्टयः) वृद्धावस्था पर्यन्त जीने वाले (सन्तु) हों ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

चौथा चरण तुम्हारा सुभगे ! सुख से सदा करे आप्लावित ।
और कामना करता हूँ मैं तुम मेरे अनुकूल रहो नित ॥

—श्री प्रताप विद्यालंकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सप्तपदी (५)

प्रजाभ्यः पञ्चपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥

आश्वलायन १.८.१९

(प्रजाभ्यः) सन्तानों के पालन के लिये (पञ्चपदी) पाँचवां पैर चलने वाली (भव) हो और (सा) वह तू (माम्) मेरे (अनुव्रता) अनुकूल हो, तेरी अनुकूलता सम्पादन के लिये (विष्णुः) व्यापक परमात्मा (त्वा) तुझे (आनयतु) अच्छी प्रकार प्राप्त करे। हम तुम दोनों मिलकर (बहून्) बहुत से (पुत्रान्) पुत्रों को (विन्दावहै) प्राप्त करें और (ते) वे पुत्र (जरदष्टयः) वृद्धावस्था पर्यन्त जीने वाले (सन्तु) हों।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

और पाँचवां चरण तुम्हारा हो सन्तति-परिपालन के हित ।
तथा कामना करता हूं मैं तुम मेरे अनुकूल रहो नित ॥

—श्री प्रताप विद्यालंकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सप्तपदी (६)

ऋतुभ्यः षटपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान्
विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥

आश्वलायन १.८.१९

(ऋतुभ्यः) ऋतुओं के अनुकूल व्यवहार सम्पादन के लिये (षट्पदी) छटा पैर चलने वाली (भव) हो और (सा) वह तू (माम्) मेरे (अनुव्रता) अनुकूल हो, तेरी अनुकूलता सम्पादन के लिये (विष्णुः) व्यापक परमात्मा (त्वा) तुझे (आनयतु) अच्छी प्रकार प्राप्त करे । हम तुम दोनों मिलकर (बहून्) बहुत से (पुत्रान्) पुत्रों को (विन्दावहै) प्राप्त करें और (ते) वे पुत्र (जरदष्टयः) वृद्धावस्था पर्यन्त जीने वाले (सन्तु) हों ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

छठा चरण षड्ऋतुओं को अनुकूल बनाये यथा अभीप्सित ।
और कामना करता हूँ मैं तुम मेरे अनुकूल रहो नित ।

—श्री प्रताप विद्यालंकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सप्तपदी (७)

सखे ! सप्तपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान्
विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ।।

आश्वलायन १.८.१९

हे (सखे) मित्रवत् वर्तमान ! मित्रता सम्पादन के लिये (सप्तपदी) सातवाँ पैर चलने वाली (भव) हो और (सा) वह तू (माम्) मेरे (अनुव्रता) अनुकूल हो, मेरी अनुकूलता सम्पादन के लिये (विष्णुः) व्यापक परमात्मा (त्वा) तुझे (आनयतु) अच्छी प्रकार प्राप्त करे। हम तुम दोनों मिलकर (बहुन्) बहुत से (पुत्रान्) पुत्रों को (विन्दावहै) प्राप्त करें और (ते) वे पुत्र (जरदष्टयः) वृद्धावस्था पर्यन्त जीने वाले (सन्तु) हों ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरण सातवां सदा सख्य के सुखद भाव से करे समन्वित।
और कामना करता हूं मैं तुम मेरे अनुकूल रहो नित।

—श्री प्रताप विद्यालंकार

सप्तपदी

सप्तपदी का प्रथम चरण यह अन्नागार रहें आपूरित,
और दूसरा चरण तुम्हारा ऊर्ज्जा दे, दे शक्ति अपरिमित,
तथा तीसरा चरण तुम्हारा करे ज्ञान को, धन को पोषित,
चौथा चरण तुम्हारा सुभगे ! सुख से सदा करे आप्लवित,
और पाँचवाँ चरण तुम्हारा हो सन्तति-परिपालन के हित,
छठा चरण षड्ऋतुओं को अनुकूल बनाये यथा-अभीप्सित,
और चरण सातवाँ सख्य के सुखद भाव से करे समन्वित।
यही कामना करता हूँ मैं तुम मेरे अनुकूल रहो नित।
उस व्यापक परमात्मा की अनुकम्पा से हम दोनों मिलकर—
पायें पुत्र अनेक, जियें जो वृद्धावस्था तक आनन्दित॥

—श्री प्रताप विद्यालंकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सूर्यावलोकन

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदःशत शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतंमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥

- यजुर्वेद अध्याय ३६.२४.

हे सूर्यवत् प्रकाशक परमेश्वर ! आप (देवहितम्) विद्वानों के हितकारी (क्रम्) शुद्ध (चक्षु:) नेमतुल्य सबके दिखाने वाले (पुरस्तात्) अनादिकाल से (उच्चरत्) अच्छी तरह सबके ज्ञाता हैं। (तत्) उस आपको हम (शतं शरदः) सौ वर्ष तक (ज्ञान द्वारा देखें। और आपकी कृपा से (शतं शरदः) सौ वर्ष तक (जीवेम) जीवें (शतं शरदः) सौ वर्ष पर्यन्त शास्त्रों को (शृणुयाम) सुने (शतं शरदः) सौ वर्ष तक (प्रब्रवाम) पढ़ावें अथवा उपदेश करें (शतं शरदः) सौ वर्ष तक (अदीनाः) दीनता रहित अर्थात् धनवान् (स्याम) हों (च) और (शतात् शरदः) सौ वर्ष से (भूयः) अधिक भी देखे, जीवें, सुनें, उपदेश करें और अदीन रहें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

हे परमेश्वर!

सूर्य-सदृश तेजोमय, भास्वर
हे परमेश्वर!
सुधीजनों का मङ्गल करने वाले प्रभुवर!
नयनों-सा सब कुछ दरसाने वाले ईश्वर!
हे अनादि! हे शुद्धबुद्ध! सर्वज्ञ चराचर!
विनती यही आपसे करते हैं जगदीश्वर!
हम शतायु हों, रहें निरामय हम जीवन भर,
सौ वर्षों तक सृष्टि आपकी देखें सुन्दर,
सौ वर्षों तक सुनें ज्ञानमय वाणी सुखकर,
सौ वर्षों तक गायें गुण आपके गुणाकर!
और व्यक्ति या वृत्ति किसी के दास न होकर—
सौ वर्षों तक जियें, और इससे भी बढ़कर
आयु मिले तो इसी तरह हम जियें निरन्तर।
हे परमेश्वर!
सूर्य-सदृश तेजोमय, भास्वर
हे परमेश्वर!

—श्री प्रताप विद्यालङ्कार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

हृदय-स्पर्श

मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु ।
मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥

पारस्कर काण्ड १ कण्डिका ८.८

वर की ओर से आत्मसमर्पण

हे वधू ! (ते) तेरे (हृदयम्) अन्तःकरण और आत्मा को (मम) मेरे (व्रते) कर्म के अनुकूल (दधामि) धारण करता हूँ (मम) मेरे (चित्तमनु) चित्त के अनुकूल (ते) तेरा (चित्तम्) चित्त सदा (अस्तु) रहे (मम) मेरी (वाचम्) वाणी को तू (एकमना:) एकाग्रचित्त से (जुषस्व) सेवन किया कर । (प्रजापतिः) प्रजा का पालन करने वाला परमत्मा (त्वा) तुझको (मह्यम्) मेरे लिये (नियुनक्तु) नियुक्त करे ॥

इसी प्रकार वधू की ओर से आत्मसमर्पण

हे प्रियवर स्वामिन् ! आपका हृदय आत्मा और अन्तःकरण अपने प्रियाचरण कर्म में धारण करती हूँ । मेरे चित्त के अनुकूल आपका चित्त सदा रहे । आप एकाग्र होकर मेरी वाणी का जो कुछ मैं आप से कहूँ उसका सेवन सदा किया कीजिये, क्योंकि आज से प्रजापति परमात्मा ने आपको मेरे अधीन किया है । वैसे मुझको आपके अधीन किया है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

मम व्रते ते हृदयं दधामि--

आज प्रजापति पावन हमको, योजित करके गृहधर्मों में—
व्रतपालन का अनुशासन देते. उसको शिरसा ग्रहण करें ॥
हे कल्याणी, मेरे व्रत में, सदा हृदय से अनुगत होवो ।
और तुम्हारे सरल हृदय में, अपना मन मैं मधुर मिलाऊँ ॥
हे कल्याणी, आज उभय हम, एक हृदय से, एक वचन से—
अपने सुंदर गृह-आँगन में, संवादों की बीन बजायें ॥

—श्री शङ्करदेव विद्यालंकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

आशीर्वाद

सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं विपरेतन ॥

ऋग्वेद १०.८५.३३

हे विद्वान् लोगों (इयम्) यह (वधूः) वधू (सुमङ्गलीः) शोभन मंगलस्वरूप है अतः इस कन्या के साथ (समेतं) मेल रखो और (इमाम्) इसको (पश्यत) मङ्गल दृष्टि से देखो और (अस्यै) इसके लिये (सौभाग्यम्) उत्तम सौभाग्यवान् होने का आशीर्वाद (दत्वाय) देकर (अथ) तदनन्तर (अस्तम्) अपने अपने घरों को (विपरेतन) जाओ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सुमंगलीरियं वधू—

सुमंगल वेशिणी दुलहन,
लखो, निज गेह जाती है।
अमृत घट एक कर में ले
दिया-मंगल सजाती है॥
सुहागिन का भला होवे
इसे आशीष पावन दो।
सुहाने स्नेह सुमनों से
महकता गेह आँगन हो॥

—श्री शंकरदेव विद्यालंकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

आशी-निमित्त निवेदन

सुमंगतीरियं वधूरिमां समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं विपरेतन ।।

ऋग्वेद १०.८५.३३

(इयम्) यह (वधूः) वधू (सुमङ्गलीः) मांगलिक चिन्ह्नों से युक्त है, (समेत) आप लोग आइयेगा और (इमां पश्यत) इसको देखियेगा । (अस्यै) इसको (सौभाग्यं दत्त्वाय) उत्तम सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद देकर (अथ) अनन्तर (अस्तम्) अपने-अपने घरों को (विपरेतन) जाइयेगा ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

आओ !
सब मिलकर आओ !
देखो, पाविनी विवाह-वेदिका,
सुन्दर जिस पर वधू सजी है।
मङ्गलमय इसके वस्त्राभूषण,
कङ्गन, नूपुर, बेंदी, गोरोचन,
देखो, इसको उत्सुकता से,
और करो शृंगार
स्वयं के भाव-सुमन से।
आशीर्वाद बिखेरो,
जैसे बादल बरस गये हों।
फिर, जाओ
जैसे जब, चाहो
देकर भी कुछ लिये हुये से॥

—डॉ० कर्णसिंह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

ध्रुवता प्रार्थना

ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ।
ध्रुवासः पर्वता इमे ध्रुवा स्त्री पतिकुले इयम् ॥
मं० ब्रा० १.६.६

हे वरानने ! जैसे (द्यौः) सूर्य की व्यक्ति अथवा विद्युत् (ध्रुवा) सूर्यलोक अथवा पृथिव्यादि में निश्चत, जैसे (पृथिवी) भूमि अपने स्वरूप में (ध्रुवा) स्थिर, जैसे (इदम्) यह विश्वम्) सब (जगत्) संसार प्रवाह स्वरूप में (ध्रुवम्) स्थिर है, जैसे (इमे) ये प्रत्यक्ष (पर्वताः) पहाड़ (ध्रुवासः) अपनी स्थिति में स्थिर हैं, वैसे (इयम्) यह तू मेरी (स्त्री) पत्नी (पतिकुले) मेरे कुल में (ध्रुवा) सदा स्थिर रहे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

हो मर्यादामय शुभ जीवन ॥
ग्रह उपग्रह नक्षत्र दिवाकर ।
जड़ चेतन नदीश रत्नाकर ॥
ध्रुवगति से परिचालित हैं ।
जगती का विकसित नन्दन वन ॥
हो मर्यादामय शुभ जीवन ॥

सूरज का प्रकाश देना ध्रुव ।
नभ का रस वरसा देना ध्रुव ॥
वसुधा सब धारण करती है ।
जिससे आनन्दित हो कण कण ॥
हो मर्यादामय शुभ जीवन ॥

मेरे कुल की मर्यादायें ।
हों तेरे कुल की रेखायें ॥
पत्थर पर अङ्कित धारा-सा
अमिट रहे तेरा गठबन्धन ॥
हो मर्यादामय शुभ जीवन ॥

—प्रो० जगन्नाथ व्यास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

ध्रुवता प्रार्थना

ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्ये मयि ।
मह्यं त्वादात् बृहस्पतिर्मयापत्या प्रजावती संजीव शरदः शतम् ।।

पारस्कार काण्ड १. कण्डिका ८.

हे स्वामिन् ! जैसे आप मेरे समीप (ध्रुवम्) दृढ़ संकल्प करके स्थिर (असि) है या जैसे मैं (त्वा) आपको (ध्रुवम्) स्थिर दृढ़ (पश्यामि) देखती हूँ वैसे ही सदा के लिये मेरे साथ आप दृढ़ रहियेगा क्योंकि मेरे मन के अनुकूल (त्वा) आपको (बृहस्पतिः) परमात्मा (अदात्) समर्पित कर चुका है, वैसे मुझ पत्नी के साथ उत्तम प्राणा युक्त होकर (शतंशरदः) सौ वर्ष पर्यन्त (संजीव) जीविये तथा हे वरानने पत्नी ! (पोष्ये) धारण और पालन करने योग्य (मयि) मुझ पति के निकट (ध्रुवा) स्थिर (एधि) रह (मह्यम्) मुझको अपनी मनसा के अनुकूल तुझे परमात्मा ने दिया है, तू (मया) मुझ (पत्या) पति के साथ (प्रजावती) बहुत उत्तम प्रजायुक्त होकर सौ वर्ष पर्यन्त आनन्दपूर्वक जीवन धारण कर ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

वधूः दृढ़ हो,
तुम सुदृढ़ हो,
मम समीप सदा रहो ।
प्राण !
मम अनुकूल हो
तुम प्रजावान्
शतायुहो ॥

वरः स्थिरा हो,
तुम सुस्थिरा हो
मम समीप सदा रहो ।
प्रिया !
मम अनुकूल रहकर
प्रजावती
तुम शतायु हो ॥

—डॉ० कर्णसिंह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

यदेतद् हृदयं तव तदस्तु हृदयं मम
यदिदꣳहृदयं मम तदस्तु हृदयं तव ॥
मं. ब्रा. १.३.९

हे स्वामिन् अथवा पत्नी ! (यदेतत्) जो यह (तव) तेरा (हृदयम्) आत्मा अथवा अन्तः करण है (तत्) वह (मम) मेरा (हृदयम्) आत्मा, अन्तः करण के तुल्य प्रिय (अस्तु) हो और (मम) मेरा (यदिदम्) जो यह (हृदयम्) आत्मा, प्राण और मन है (तत्) सो (तव) तेरे (हृदयम्) आत्मादि के तुल्य प्रिय (अस्तु) सदा रहे ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नया संसार बसायें ।।

जहा विषमता, समतामय हो ।
चिर अनजाने, हों चिर साथी ।।
हम तुम स्नेहमयी जगती में ।
रक्षित करे स्नेहमय थाथी ।।
स्नेहिल वन्दनवार सजायें ।
एक नया संसार बसायें ।।

तेरी मन वाणी की छाया ।
हो मेरी तनमन मधुवाणी ।।
तुम भावों के इन्द्रसरीखे ।
मैं हूँ भक्तिमयी इन्द्राणी ।।
हम कटुता को दूर भगायें।
एक नया संसार बसायें ।।

जीवन अर्पणत्यर्पण से ।
स्वर्णिम अमराईसा महके ।।
जिसमें सुख विहंग की होली ।
अविरल मधुरसदायी चहके ।।
इस बन्धन को सरस बनायें ।
एक नया संसार बनायें ।।

—प्रो० जगन्नाथ व्यास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

आशीर्वाद

इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे ।।

ऋग्वेद १०. ८५. ४२

हे स्त्री और पुरुष ! मैं परमेश्वर आज्ञा देता हूँ कि जो तुम्हारे लिये पूर्व विवाह में प्रतिज्ञा हो चुकी है, जिसको तुम दोनों ने स्वीकार किया है (इहैव) इसी में (स्तम्) तत्पर रहो (मा वियौष्टम्) इस प्रतिज्ञा से वियुक्त मत होओ (विश्वमायुर्व्यश्नुतम्) अनुगामी होकर सम्पूर्ण आयु, जो सौ वर्षों से कम नहीं है, को प्राप्त होवो, पूर्वोक्त धर्म रीति से (पुत्रैः) पुत्रों और (नप्तृभिः) नातियों के साथ (क्रीडन्तौ) क्रीड़ा करते हुये (स्वेगृहे) उत्तम गृह वाले गृहाश्रम में (मोदमानौ) आनन्दित होकर प्रीति पूर्वक वास करो ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म]

पाणिग्रहण के समय जो संकल्प हैं मन से किये ।
उन पर सदा रहना अडिग सम्पूर्ण जीवन भोगते ।।
पुत्र, पौत्रों, नातियों के साथ हिलमिल स्नेह में ।
भोगो गृहस्थाश्रम सदा सानन्द अपने गेह में ।।

—प्रो० रामनाथ "सुमन"

नव दाम्पत्य स्नेह के मोहक सूत्रों से वंध जाने वालो
हे नारी ! नव-वधू ! पुरुष ! वर ! मुझ परमेश्वर-
की आज्ञा को सम्यक् सोचो और समझ लो ।
रहना है आरूढ तुम्हें उस ऊँचे प्रणपर
तुम दोनों ने जिसको अङ्गीकार किया है ।
इस विवाह की वेदी पर मन, कर्म, वचन से
अटल रहो तुम दोनों शत वर्षों तक ।
यही प्रतिज्ञा परिणय पथ की होगी सवल ।
पालन करते हुये गृहस्थी दायित्वों का
सुख-समृद्धि को भोगो लम्बी आयु तक
पुत्रों, पौत्रों से सजीव परिवार सुखों को,
अपने उत्तम घर में पाओगे तुम दोनों ।।

—प्रो० सेवाराम शर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

इहेमाविन्द्र संनुद चक्रवाकेव दम्पती ।
प्रजयैनौ स्वस्तकौ विश्वमायुर्व्यश्नुताम ॥

अथर्ववेद १४.२.६४

हे (इन्द्र) परमैश्वर्ययुक्त विद्वान् ! आप (इह) इस संसार में (इमौ) इन दोनों स्त्री और पुरुष को (संनुद) प्रेरणा कीजिये कि (दम्पती) ये जाया और पति (चक्रवाकेव) चकवा-चकवी के समान एक दूसरे से प्रेम बद्ध रहे (एनौ) ये दोनों (स्वस्तकौ) उत्तम घर में रहते हुये (प्रजया) अपनी प्रजा सहित (विश्वम्) पूर्ण (आयुः) आयु को (अश्नुताम्) प्राप्त करें ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सर्वेश सविता प्रेरणा ऐसी तुम्हें अविराम दें।
जीवन सदा चकवा युगलसा प्रेमबद्ध बना रहे ॥
उत्तम भवन में वास हो, सन्तान सुख पाते रहो।
सम्पुर्ण आयु प्राप्त कर आमोद में गाते रहो ॥

—प्रो० रामनाथ सुमन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

त्वष्टा जायामजनयत् त्वष्टास्यै त्वां पतिम् ।
त्वष्टा सहस्रमायूंषि दीर्घमायुः वृणोतु वाम् ॥

अथर्व० ६.७८.२

(त्वष्टा) परमात्मा (जायाम्) स्त्री को (अजनयत्) उत्पन्न करता है और (अस्यै) इस स्त्री के लिये हे पुरुष ! (त्वष्टा) परमात्मा ही (त्वां पतिम्) तुम पति को भी उत्पन्न करता है, (त्वष्टा) परमात्मा ही (वाम्) तुम दोनों के लिये (सहस्रम्) हजारों (आयूंसि) वर्षों का (दीर्घम् आयुः) दीर्घ जीवन (वृणोतु) प्रदान करे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

हे विष्णुरूप वरेण्यवर, तुम युग-युगों जीते रहो।
दाम्पत्य जीवन का सुखद सौरस्य तुम पीते रहो॥
प्रभु ने तुम्हें इसके लिये, इसको तुम्हारे ही लिये–
दे जन्म भेजा है यहाँ आदर्श जीवन के जिये॥

—प्रो० रामनाथ "सुमन"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1942

[ओ३म्]

एषा ते राजन् कन्या वधूर्निधूयतां यम ।
सा मातु र्बध्यतां गृहेऽथो भ्रातुरथो पितुः ॥

अथर्व० १.१४.२.

कन्या के पिता का वर के प्रतिवचन

हे (यम) यम-नियमों के पालक ब्रह्मचारिन् ! हे (राजन्) ज्ञान और ब्रह्मवर्चस् तेज से प्रकाशमान वर ! (एषा) यह (कन्या) कन्या (ते) तेरी (वधूः) वधू रूप होकर (निधूयताम्) गृहस्थ सुख प्राप्त करे। (सा) वह कन्या (मातुः) माता (अथो भ्रातुः) और भाई (अथो पितुः) और पिता के (गृहे) गृह में (बध्यताम्) गृहस्थ बन्धन में बँधे ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

माता-पिता, भाई बहिन सबसे मधुर सम्बन्ध रख ।
यह गेहिनी बन जाय तुम-सा संयमी वर प्राप्त कर ।।

—प्रो० रामनाथ "सुमन"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

आशासाना सौमनसं प्रजां सौभाग्यं रयिम् ।
पत्युरनुव्रता भूत्वा सं नह्यस्वामृताय कम् ॥

अथर्व० १४.१.४२.

(सौमनस्) उत्तम मन (प्रजाम्) सन्तान (सौभाग्यम्) सौभाग्य और (रयिम्) धन की (आशासाना) आशा करने वाली तुम (पत्युः) पति के (अनुव्रता) अनुकूल आचरण करने वाली (भूत्वा) होकर (अमृताय) अमरत्व के लिये (कम्) सुखपूर्ण रीति से (संनह्यस्व) सिद्ध हो ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

सौभाग्य, सन्तति सौमनस्, सम्पत्ति की आशा लिये।
पतिदेव के अनुकूल यदि शुभ आचरण तुमने किये,
तो अभ्युदय की वाटिका इस लोक में खिल जायगी।
निश्चय समझना सिद्धता अमरत्व की मिल जायगी॥

—प्रो० रामनाथ "सुमन"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा ।
एषा त्वं साम्राज्येधि पायुरस्तं परेत्य ।। अथर्व० १.१४.४३

(यथा) जिस प्रकार (वृषा) वलशाली (सिन्धु:) समुद्र (नदीनाम्) नदियों का (साम्राज्यम्) साम्राज्य (सुषुवे) चलाता है, इसी प्रकार (त्वम्) तुम (पत्यु:) पति के (अस्तं) घर को (परेत्य) पहुंच कर (सम्राज्ञी) सम्रासी (एधि) होकर वहां रहना ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

जिस भाँति नदियाँ सिन्धु के साम्राज्य में जीवन बिता ।
गति-मति समर्पित कर उसीको मोद पातीं सर्वदा ।।
उस भाँति, बेटी पहुँच कर प्राणेश पति के गेह में ।
तुम सौंपकर सर्वस्व निज को भूल जाना स्नेह में ।।

—प्रो० रामनाथ "सुमन"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

पूर्ण है "वह" ।
पूर्ण है "यह" ।
पूर्ण से—
परिपूर्ण है यह ।
पूर्ण से पूर्ण लेकर—
भी रहा है—
पूर्ण ही "वह" ॥

—डॉ० कर्णसिंह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

उपदेश

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखी वृत्तिं सपत्नी जने ।
भर्तृ विप्रकृतापि रोषणतया मास्म प्रतीप गमः ।।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भागेष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः।कुलस्याधयः ।।

—कालिदास (अभिज्ञानशाकुन्तलम्) ४.१७

(गुरून्) अपने मान्य सास, श्वसुर आदि गुरूजनों की शुश्रूषस्व) सेवा करना, अपनी (सपत्नीजने) सपत्नियों के साथ (प्रियसखीं वृत्तिम्) प्रिय सखी जैसा व्यवहार (कुरु) करना (विप्रवृताः अपि) अपमानित होने पर भी (रोषणतया) क्रोध के कारण आवेश में आकर (भर्तृः) पति के (प्रतीपम्) प्रतिकूल (मास्म गमः) आचरण मत करना, (परिजने) अपने आश्रित सेवकों आदि पर (भूयिष्ठम्) 'अत्यन्त (दक्षिणा) उदार (भव) रहना और (भाग्येषु) अपने सौभाग्य पर (अनुत्सेकिनी) गर्व मत करना (एवम्) इस प्रकार का आचरण करने से (युवतयः) स्त्रियाँ (गृहिणीपदम्) गृहलक्ष्मी के (यान्ति) प्राप्त करती हैं और (वामाः) इसके विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ पद को (कुलस्य) अपने कुल के लिये (आधयः) दुःख का कारण होती हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

। ओ३म् ।

सास, श्वसुर आदि गुरुजन की, श्रद्धानत सेवा करना ।
अपमानित या क्रोधित हो, तब भी शान्त भाव रखना ।
पति के जो अनुकूल बने, वही आचरण तुम करना ।
अपने आश्रित जो सेवक हों, उनके प्रति उदार बनना ।
सौभाग्य मिला है जो तुमको, उस पर गर्व नहीं करना ।
इस प्रकार के जीवन वाली, सच्ची गृहलक्ष्मी बनना ।
विपरीत आचरण कुलनाशक, बात याद यह तुम रखना ॥

—सुषमा 'प्रेमी'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

उपदेश

अभ्युत्थानमुपागते गृहपतौ तद्भाषणे नम्रता
तत्पादार्पित दृष्टिरासनविधि स्तस्योपचर्या स्वयम् ।
सुप्ते तत्र शमीत तत्प्रथमतो जह्याश्च शय्यामिति
प्राच्यैः पुत्रि निवेदितः कुलवधूसिद्धान्तधर्मागमः ॥

— कश्चित्

हे (पुत्रि) पुत्रि ! प्राच्यैः) प्राचीन ऋषि-मुनियों ने (गृहपतौ) गृहपति अपने स्वामी के (उपागते) आने पर (अभ्युत्थानम्) उठकर उसका सत्कार करना (तद्भाषणे) उसके साथ बात-चीत करने पर (नम्रता) नम्रता (तत्पादार्पित दृष्टिः) से उसके चरणों में निरन्तर दृष्टि रखना, (आसनविधिः) उसकी बैठने के लिये आसन देना, (तस्य) उस अपने पति की (स्वयम्) अपने आप (उपचर्या) सेवा करना (तम-सुप्ते) उसके सो जाने पर शयीत सोना और (तत्प्रथमतः) उसके उठने से पूर्व (शय्याम्) बिस्तर को (जाह्यः)छोड़ देना (इति) इस प्रकार (कुलवधूसिद्धान्तधर्मागमः) कुलवधुओं का धार्मिक सिद्धान्त (निवेदितः) कहा है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

गृहपति जब आयें तब उठे मान करने,
वह जब कुछ बोलें नम्रता तब दिखाये।
निज-पति-चरणों में दृष्टि रक्खे सदा ही,
नितप्रति पति-पूजा, मञ्जु आसन बिछाये॥

पति जब सो जाये तब स्वयं नींद पाये,
निज पति से पहले नींद का त्याग जाने।
यह ऋषि मुनियों ने पुत्रि, वेदानुसारी
शुभ कुलवधुओं के धर्म-सिद्धान्त माने॥

—प्रो० रामकृपालु शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

उपदेश

भक्तिः प्रेयसि संश्रितेषु करूणा श्वश्रूषु नम्रं शिरः ।
प्रीतिर्यातृषु गौरवं गुरूजने क्षान्तिः कृतागस्यपि ।
निर्व्याजस्तु रतिर्ननान्दृषु सदा भोगेष्वनुत्सेकिता
स्नैग्ध्यं वन्धुषु सौहृदं परिजने स्मेरास्यता स्वामिनी ।।

—कश्चित्

(प्रेयसि) प्रिय व्यक्ति के विषय में (भक्तिः) भक्ति रखना, (संश्रितेषु) आश्रित व्यक्तियों के विषय में (करुणा) करुण प्रदर्शित करना, (श्वश्रूषु) सास-और श्वसुर के विषय में नित्य प्रति (नम्रं शिरः) विनयावनत सिर वाली होना (यातृषु) जिठानी और देवरानी के विषय में (प्रीतिः) प्रेमभय व्यवहार करना (गुरूजने) अपने बड़े और मान्य व्यक्तियों के विषय में (गौरवम्) गुरूता का ध्यान रखना, (कृतागसि अपि) किसी के अपराध कर देने पर भी (क्षान्तिः) क्षमा शील होना (ननान्दृषु) ननद आदि के विषय में (निर्व्याजः) कपट रहित (रतिः) स्नेहभाव रखना, (सदा) हमेशा अपने (भाग्येषु) सौभाग्य के प्रति (अनुत्सेकिता) गर्वरहित रहना (वन्धुषु) वन्धुओं के साथ (स्नेग्ध्यम्) स्निग्धता का व्यवहार रखना (परिजने) सेवक वर्ग के प्रति (सौहृदम्) सुहृदभाव और अपने (स्वामिनि) पति के प्रति सर्वदा (स्मेरास्यता) मुसकराती हुई व्यवहार रखना ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

प्रियजन में हो भक्ति, आश्रितों में करुणा दिखलाये,
सास-ससुर में विनत भाव से नतमस्तक बन जाये,
देवरानी में और जिठानी में वह प्रेम दिखाये,
गौरव भाव गुरुजनों के प्रति सदा-सदा अपनाये ॥

ननद आदि पर स्नेह निष्कपट, सापराधजन क्षम्य बनें,
निज सौभाग्य-वृद्धि होते भी गर्वरहित ही भाव घने,
बन्धुजनों में स्नेह भाव हो, सुहृद्भाव सेवकगण में,
पति से जब व्यवहार करे मुस्कान भरी हो आनन में ॥

—प्रो० रामकृपालु शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

विदाई

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम् !
वैक्लव्यं मम तावदीहशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीडयन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेष दुःखैर्नवैः ।।

कालिदास (अभिज्ञान० ४.६.)

(अद्य) आज (शकुन्तला) शकुन्तला अपने पतिगृह को (यास्यति) जायेगी (इति) इस कारण से (हृदयम्) मेरा मन (उत्कण्ठया) दुःख से (संस्पृष्टम्) पूर्ण रूप भर रहा है, (कण्ठः) मेरा गला (स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषः) अश्रु धाराओं को रोकने के कारण भर आया है, मेरी (दर्शनम) दृष्टि (चिन्ताजडम्) शकुन्तला के जाने की चिन्ता से देखने में असमर्थ हो रही है (अरण्यौकसः) वन मे विवास करने वाले (नमतावत्) मुझ कण्व की (स्नेहात्) शकुन्तला के प्रति प्रेम के कारण (इदम्) यह (ईदृशम्) ऐसी (वैक्लव्यम्) विकलता है तब (गृहिणः) गृहस्थी पुरुष (नवैः) प्रथम बार (तनयाविश्लेषदुःखैः) पुत्री के वियोग से उत्पन्न दुःखों से (कथ नु) कितने अधिक (पीडयन्ते) दुःखित होते होंगे ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

लो, आज
एक शकुन्तला
पुनः विदा हो रही है।
द्रवित हुआ है एक पिता फिर,
किन्तु साथ में माता भी है।
आँखों से उनकी झर-झर आँसू बहते हैं।
अनकही करुणकथा कण्व की
फिर कहते हैं॥

—डॉ० कर्णसिंह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

तथा च सीता रामस्य प्राणेभ्योऽपि प्रियाऽभवत् ।
हृदयं त्वेव जानाति प्रीतियोगं परस्परम् ॥

—वाल्मीकिरामायणम्

(रामस्य) रामचन्द्र को (सीता) सीता (तथा) उस प्रकार से (प्राणेभ्योऽपि) प्राणों से भी अधिक (प्रिया) प्रिय (अभवत्) हो गई थी (तु) क्योंकि (हृदयमेव) हृदय ही (परस्परम्) एक दूसरे के (प्रीतियोगम्) प्रेम के सम्बन्ध को (जानाति) जानता है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाणिनि-कन्या-महाविद्यालय
तिथि
पु०सं० 1942

[ओ३म्]

प्राणों से भी ज्यादा प्रिय हो तुम प्रीतम को,
सीता ने पाया था प्यार ज्यों श्रीराम का।
हृदय ही पहचानता है हृदय के नेह को,
सम्बल इसे जानो तुम साजन के नाम का।

—सुषमा 'प्रेमी'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

अद्वैत-प्रेम

अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु यद्
विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः ।
कालेनावरणात्ययात्परिणते यत्स्नेहसारे स्थितं,
भद्रं प्रेम सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तत्प्रार्थ्यते ।।

——भवभूति (उत्तररामचरितम् १.३९)

(यत्) जो दाम्पत्यभाव (सुखदुःखयोः) सुख और दुःख में (अद्वैतम्) एक रूप रहता है, जो जीवन की (सर्वासु अवस्थासु) सभी अवस्थाओं में (अनुगतम्) व्याप्त रहता है (यत्र) जिस दाम्पत्य में (हृदयस्य) हृदय को (विश्रामः) विश्राम मिलता है, (यत्र) जिस दाम्पत्य में (रसः) अनुराग को (जरया) वृद्धावस्था (अहार्यः) हर नहीं सकती है (यत्) जो दाम्पत्य (कालेन) समय के अनुसार (आवरणात्ययात्) विवाह से लेकर मृत्यु पर्यन्त (परिणते) परिपक्व (स्नेहसारे) प्रेम के सारभाग में (स्थितम्) स्थित है (तस्य) उस (सुमानुषस्य) दाम्पत्य का (तत्) वह अनिर्वचनीय और (एकम्) विलक्षण (भद्रम्) आनन्दमय (प्रेम) प्रेम (कथमपि) सर्वथा (प्रार्थ्यते) अभीष्ट है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी......
पुस्तं... 1942
भारती पुस्तकालय

समता का भाव रहे, सुख हो या दुःख घेरे ।
जीवन की विविधता में, सरसता सदा लहरे ।
प्रीति और मधुरता को, वृद्धायु न हेरे ।
विवाह से मृत्यु तक, प्रेम के रहें फेरे ।
ऐसे अनोखे, अनिर्वचनीय दाम्पत्य का
सारा सुख, वैभव, आनन्द तुम्हें घेरें ॥

—सुषमा 'प्रेमी'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

शुभास्ते सन्तु पन्थानः ।
तव वर्त्मनि वर्ततां शुभम् ॥

(ते) तुम्हारे (पन्थानः) मार्ग (शुभाः) कल्याणकारी (सन्तु) होवें ॥
(तव) तुम्हारे (वार्त्मनिः) मार्ग में (शुभम्) कल्याण (वर्तताम्) होवे ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

पाणिनि-कन्या-अनुसन्धान...
तिथि......
पुस्तक सं० 1712
...पुस्तकालय

मंगलमय हो मार्ग तुम्हारा;
मार्ग तुम्हारा मंगलमय हो ।
मंगलमार्ग के पथिक बनो तुम;
मंगलमय हो यह जग सारा ॥

—डॉ० कर्णसिंह

जीवन-यात्रा निष्कंटक हो,
मार्ग तुम्हारा सहज, सरल हो ।
राह चलो तुम प्रेम-पंथ की,
हर दिन ज्योतिर्मय, मंगल हो ।

सुषमा 'प्रेमी'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ओ३म्]

विदाई-गीत

[शाकुंतल नाटक की भाव-भूमिका की दृष्टि से]

हे तपोवन के निकुंजो,
वल्लरी के हे प्रसूनो,
कुंज-वीथी के विहंगो,
आज श्रद्धा को विदा दो ॥

हे मयूरो कोकिलाओ,
बाग के मंजुल गुलाबो,
स्नेह भर-भर लोचनों से
आज श्रद्धा को विदा दो ॥

पर्ण-कुटिया की दुलारी
प्रिय निरूपण-नंदिनी को,
मातु–लोचन–तारिका को
आज श्रद्धा को विदा दो ॥

बहन-सी प्यारी लताओ,
फूल भर-भर अंजलि में,
कण्व-कन्या की तरह
आज श्रद्धा को विदा दो ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1942

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.